A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 02 फरवरी, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 153, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

(डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom

facebookĐcom/subahsaverenews

wwwĐsubahsavereĐnews

twitterĐcom/subahsaverenews

वासंती प्रकृति ...

फोटो : पंकज शर्मा

आम बजट 2025 में वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने दी

अबकी बार, खुशियां अपार

- मिडिल क्लास की बल्ले-बल्ले, सरकार का सरप्राइज गिफ्ट
- 12 लाख तक की आय पर कोई इनकम टैक्स नहीं लगेगा
- इनकम टैक्स स्लैब में बड़ा बदलाव, दे दी छप्परफाड़ खुशी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र की मोदी सरकार ने आम बजट 2025 में आम आदमी को बड़ा सरप्राइज दिया है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट पेश करते हुए इनकम टैक्स स्लैब को लेकर बड़ा ऐलान किया। अब देश में 12 लाख रुपये की कमाई पर कोई इनकम टैक्स नहीं देना होगा। सरकार के इस फैसले ने सबको चौंका दिया। बजट से पहले माना जा रहा था कि सरकार मिडिल क्लास के लिए राहत दे सकती है, लेकिन यह नहीं सोचा था कि राहत इतनी बड़ी होगी। शनिवार को लोकसभा में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आम बजट 2025 पेश किया। इस दौरान उन्होंने कई बड़े ऐलान किया। वित्त मंत्री ने बताया कि सरकार अगले सप्ताह नया इनकम टैक्स बिल लेकर आ रही है। इसके साथ ही मोदी सरकार ने मिडिल क्लास को राहत देते हुए इनकम टैक्स स्लैब में बड़ा बदलाव किया। अब 12 लाख रुपये तक कमाई पर कोई इनकम टैक्स नहीं लगेगा। ऐसा पहली बार नहीं है, जब मोदी सरकार ने ऐतिहासिक फैसले करके सबको चौंका दिया। मोदी ने 2016 में अचानक नोटबंदी का फैसला किया था। मोदी ने 8 नवंबर साल 2016 को रात 8 बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को संबोधित किया और रात 12 बजे 500 और 1000 के नोट को चलन से बाहर कर दिया था। इसके अलावा मोदी सरकार ने सर्जिकल स्ट्राइक, बालाकोट एयर स्ट्राइक, कश्मीर से आर्टिकल 370 हटाना, जीएसटी कानून, तीन तलाक कानून और सीएए-एनआरसी से कई चौंकाने वाले फैसले किए। दूसरे और तीसरे स्लैब के टैक्स सरकार 87ए के तहत माफ कर देगी। इसके अलावा 75 हजार का स्टैंडर्ड डिडक्शन भी मिलेगा। इस तरह नौकरीपेशा लोगों की कुल 12.75 लाख की इनकम टैक्स फ्री हो जाएगी। ध्यान रहे कि यह राहत केवल नौकरीपेशा लोगों के लिए है। अन्य किसी भी जरिए से आमदनी होने पर टैक्स में छूट की सीमा केवल 12 लाख ही रहेगी।

महिलाओं के लिए 2 ऐलान

एससी -एसटी की एमएसएमई महिला उद्यमियों के लिए विशेष लोन योजना। पहली बार उद्यमी बनने वाली महिलाओं को दो करोड़ का टर्म लोन मिलेगा।

बुजुर्गों के लिए 6 ऐलान

सीनियर सिटिजंस के लिए टैक्स छूट दोगुनी, 50 हजार से बढ़ाकर 1 लाख रुपए। 36 जीवन रक्षक दवाएं पूरी तरह से टैक्स फ्री। देश में 200 डे-केयर कैसर सेंटर बनेंगे। मेडिकल उपकरण और कैंसर की दवाएं सस्ती होंगी। 6 जीवन रक्षक दवाओं पर कस्टम ड्यूटी 5 फीसदी घटाई। 13 मरीज सहायता कार्यक्रम बेसिक कस्टम ड्यूटी से बाहर।

मध्यम वर्ग के लिए ऐलान

अब 12 लाख की कमाई पर कोई टैक्स नहीं। नौकरीपेशा लोगों के लिए 75 हजार स्टैंडर्ड डिक्शन के साथ टैक्स लिमिट 12.75 लाख। बुजुर्गों के लिए टैक्स छूट डबल की गई। किराया आमदनी पर टीडीएस छूट 6 लाख रुपए की गई। मोबाइल फोन और ई-कार सस्ती होंगी। ईवी और मोबाइल की लीथियम आयन बैटरी सस्ती होंगी। एलईडी-एलसीडी टीवी सस्ती होंगी। कस्टम ड्यूटी घटाकर 2.5 फीसदी की गई। देश में अगले हफ्ते नया बिल लाया जाएगा।

किसानों के लिए ऐलान

किसान क्रेडिट कार्ड की लिमिट 3 लाख से बढ़ाकर 5 लाख रुपए हुई। देश में पीएम धन-धान्य कृषि योजना शुरू होगी।100 जिलों को फायदा होगा। डेयरी और मछली पालन के लिए 5 लाख रुपए तक का लोन। समुद्री उत्पाद सस्ते होंगे, कस्टम ड्यूटी 30 से घटाकर 5 फीसदी की गई। अंडमान, निकोबार और गहरे समुद्र में मछली पकड़ने को बढ़ावा मिलेगा। बिहार के किसानों की मदद के लिए मखाना बोर्ड का गठन होगा।

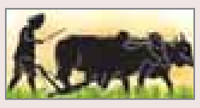

खजाना भरने वाला नहीं लोगों की जेब भरने वाला बजट : मोदी

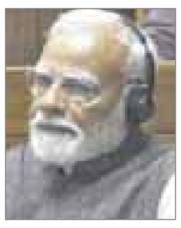

नई दिल्ली (एजेंसी)। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को बजट 2025 पेश किया। इसमें कई तरह को घोषणाएं की गई हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बजट के लिए निर्मला सीतारमण को बधाई दी। पीएम ने कहा, हर कोई आपकी प्रशंसा कर रहा है, बजट बहुत अच्छा है। प्रधानमंत्री ने कहा- यह बजट सामान्य नागरिक, विकसित भारत के मिशन को पूरा करने वाला है। ये बजट इन्वेस्टमेंट, कन्जम्पशन को बढ़ाएगा। मैं वित्त मंत्री और उनकी टीम को पीपुल्स का बजट बनाने के लिए बधाई देता हूं। भारत में बड़े शिप के निर्माण को बढ़ावा मिलेगा। ये सर्वाधिक रोजगार देने वाला क्षेत्र है।

मध्यम वर्ग के लिए बड़ी सौगात -मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में केन्द्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा प्रस्तुत केन्द्रीय बजट 2025-26 विकसित भारत के संकल्पों की सिद्धि की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। यह कल्याणकारी, सर्व-स्पर्शी और समावेशी बजट देश के गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी शक्ति के समग्र विकास के साथ स्टार्ट-अप्स, इनोवेशन तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे विभिन्न क्षेत्रों को समाहित करते हुए, अंत्योदय की भावना और नवोन्मेष की नव-दृष्टि से परिपूर्ण है।

सुप्रभात

विदा होती बेटी

जैसे पलट-पलट कर देखती है माँ की देहरी
जाते-जाते अचानक ठिठक कर देखती है ठंड
और कांप उठते हैं दिन- रात
जैसे कांपता है मां का हृदय
बेटी की सिसकियों के साथ

कांपते समय को पीछे छोड़ आगे बढ़ती है ठंड
और मौसम वसंत हो जाता है
जिसकी हवाओं पर
बर्फ के फाहों की तरह जमा हैं
जनवरी की स्मृतियाँ
जिन्हें हौले-हौले पिघला रही है
मार्च के आने की उम्मीद

जनवरी के जाने और मार्च के आने के बीच
यह जो अलग सी ठंड है, और अलग सी गरमी है
और यह जो न ठंड है, न गरमी है
जिसे न तीस चाहिए न इकतीस
उनतीस या अट्ठाईस दिन पाकर भी
जिसकी झोली भरी है
वही तो फरवरी है

ये फ़क़त एक माह नहीं
जीने की राह है प्यारे !

- अरुण आदित्य

म.प्र. टूरिज्म को दो कैटेगरी में बेस्ट स्टेट का अवॉर्ड

मुंबई में आयोजित 8वें 'ट्रैवल एंड हॉस्पिटैलिटी अवॉर्ड्स 2025' में मिला सम्मान

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयासों के लिए म.प्र.टूरिज्म को दो कैटेगरी में अवॉर्ड मिले हैं। मुंबई में आयोजित 8वें 'ट्रैवल एंड हॉस्पिटैलिटी अवॉर्ड्स 2025' में एमपी को 'मेलों और उत्सवों को बढ़ावा देने वाला सर्वश्रेष्ठ राज्य' और 'प्रचार-प्रसार के लिए सर्वश्रेष्ठ राज्य' के पुरस्कार से नवाजा गया। इस

उपलब्धि पर प्रमुख सचिव पर्यटन शिवशेखर शुक्ला ने कहा कि मध्यप्रदेश के मेले और उत्सव सिर्फ आयोजन नहीं हैं, बल्कि वे हमारे इतिहास, परंपराओं और जनमानस की भावनाओं का उत्सव हैं। हमारा प्रयास है कि मध्य प्रदेश को विश्व के प्रमुख सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पर्यटन स्थलों में स्थापित किया जाए।

बजट 2025-26 | मध्यवर्ग की कामधेनु को रिझा कर लक्ष्मी बरसाने की कामना का बजट

बजट/त्वरित टिप्पणी
अजय बोकिल

मान्यता है कि समुद्र मंथन में निकले चौदह रत्नो में से निकला तीसरा रत्न कामधेनु यदि प्रसन्न हो तो इसी मंथन की 10 वीं दसवीं उपलब्धि लक्ष्मी खुद ब खुद कृपावंत हो जाती है। केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन ने लगातार आठवें आम बजट में इसी पौराणिक मान्यता का आर्थिक अनुवाद कर देश की कामधेनु मध्यम वर्ग को कर राहत देकर लक्ष्मी बरसाने की कोशिश की है। देश की कुल आबादी का करीब 32 फीसदी वो मिडिल क्लास है, जो मुख्य रूप से वेतन भोगी है और आयकर सहित अधिकांश टैक्स ईमानदारी से चुकाता है। इसके बावजूद मध्यवर्ग को शिकायत रही है कि देश में तेजी से पनप रहे राजनीति और आर्थिकी के कॉकटेल 'रेवड़ी कल्चर' में उसके लिए कोई खास जगह नहीं बूझी जा रही। तो क्या ईमानदारी से टैक्स देना गुनाह है? निर्मला सीतारमन के बजट में निहित संदेश यही है कि ऐसा नहीं है। सरकार को मध्य वर्ग की भी चिंता है। आखिर इस क्लास का बड़ा हिस्सा भाजपा का वोटर है और तकलीफें सहने के बाद भी मोटे तौर पर वह भाजपा के साथ खड़ा रहा है। लिहाजा देश के सकल राजस्व संग्रहण में अपने कर भुगतान के जरिए 19 फीसदी योगदान देने वाले इस वर्ग को मोदी सरकार के 11 साल के कार्यकाल पहली बार इतनी प्रमुखता से फोकस किया गया है। निश्चय ही वित्त मंत्री ने नए टैक्स रेजीम में 12 लाख तक की आय पर कर में छूट का ऐलान उस मध्यत वर्ग के लिए बड़ी राहत है, जो महंगाई और बेरोजगारी से परेशान है। समग्रता में देखें तो निर्मला सीतारमन का यह बजट पिछले साल घोषित मोदी सरकार की नीति कि 2047 तक भारत को विकसित देश बनाना है, की दिशा में एक और पायदान है। हालांकि यह सीधे तौर पर महंगाई और बेकारी घटाने को एड्रेस नहीं करता। फिर भी इस बजट में सभी के लिए कुछ न कुछ है। राजनीतिक नजरिए से देखें तो इस साल के अंत में बिहार में होने वाले विधानसभा चुनाव तथा केन्द्र सरकार की जरूरी बैसाखी को ध्यान में रखकर इस राज्य पर खास कृपा बरसाई गई है। जबकि बाकी राज्यों को खास तवज्जो नहीं दी गई है। अलबत्ता इसका कुछ असर दिल्ली विधानसभा चुनाव में दिख सकता है, जहां भाजपा इस बार सत्ता पाने का सपना देख रही है।

दरअसल भारत में आर्थिकी की गाड़ी को बुलेट ट्रेन की रफ्ता र से दौड़ाने, भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थ व्यवस्था बनाने में अभी कई चुनौतियां और रोड़े हैं। वित्त मंत्री द्वारा पेश आर्थिक सर्वेक्षण में यह बात साफ कही गई है कि देश की आर्थिकी के बुनियादी तत्व मजबूत हैं, इसलिए सकल घरेलू उत्पादन (जीडीपी) की ग्रोथ रेट 7.4 प्रतिशत के आसपास रहने वाली है। यह इस मायने में तो संतोषजनक है कि दुनिया के केवल 11 देश ऐसे हैं, जिनकी जीडीपी वृद्धि दर 6 फीसदी से ज्यादा है, लेकिन इनमें भारत को छोड़कर बाकी सभी बहुत छोटे छोटे देश हैं। अगर हमे विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्थाम बनना है तो जीडीपी वृद्धि दर 8 फीसदी से ज्यादा चाहिए, जो फिलहाल तो दूर की कौड़ी लगती है। बहरहाल जीडीपी ग्रोथ रेट जो भी हो, उसमें मध्यवर्ग की भूमिका श्रम, आय, उत्पादन और कर भुगतान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। देश में बढ़ता मध्यम वर्ग इस बात की जमानत है कि बड़ी संख्या में लोग निम्न आय वर्ग के भंवर जाल से बाहर निकल कर बेहतर जिंदगी जीने के आकांक्षी मध्यह वर्ग के दायरे में शामिल हो रहे हैं। माना जा रहा है कि आजादी के शताब्दी वर्ष 2047 में मध्य वर्ग की आबादी देश की कुल जनसंख्या का 60 फीसदी होगी। यही देश का बहुत बड़ा उपभोक्ता और करदाता वर्ग भी होगा। इसीलिए यह सरकार के लिए 'कामधेनु' है। भारत को आर्थिक महाशक्ति बनाने में मध्य वर्ग की महती भूमिका होगी। ऐसे में जब हर पार्टी वोटों की खातिर मुख्यग रूप से निम्न वर्ग को रेवड़ी बांटने की स्पर्द्धा में शामिल है, तब 'कामधेनु' मिडिल क्लास की उपेक्षा करना अथवा उससे 'घर के बड़े बेटे' की तरह हमेशा त्याग और उदारता की अपेक्षा करना न्याय संगत नहीं होगा। अगर वित्त मंत्री ने सालाना 12 लाख रू. तक की आय को टैक्स फ्री कर दिया है तो इसमें संदेश यही है कि कर न देने के कारण बचा पैसा या तो बाजार में आएगा या फिर बचत के रूप में परोक्ष रूप से सरकार के पास ही जाएगा। यह तबले पर तिरकिट बजाने जैसा है। मेडिकल पॉलिसी पर टैक्स की बचत, अगर आपके माता-पिता सीनियर सिटीजन हैं, तो उनके नाम पर हेल्थ इंश्योरेंस खरीदने पर 50 हजार रुपए तक की अतिरिक्त छूट, नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) में सालाना 50 हजार रूपए तक निवेश करने पर 50 हजार रुपए की छूट ऐसे प्रावधान हैं, जो मध्य वर्ग को सबसे ज्यादा राहत पहुंचाएंगे।

मध्य वर्ग की खूबी यह है कि अगर उसकी आय सीमित है तो अपेक्षाओं का आकाश और खुशियों की झोली भी छोटी है। बीते दो दशकों से मध्यम वर्ग भाजपा के साथ एक मजबूत वोट बैंक के रूप में खड़ा है। वित्त मंत्री ने उसे ही साधे रखने की आर्थिक कवायद की है। इससे मध्य वर्ग कितना संतुष्ट होगा, यह आने वाले चुनाव जता देंगे।

- शेष पेज 2 पर

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25°c न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 02 फरवरी 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

- एमएसएमई के लिए लोन गारंटी कवर 5 करोड़ से बढ़कर 10 करोड़ हुआ
- 12 लाख रुपये तक नहीं देना होगा कोई इनकम टैक्स किसानों-युवाओं, को तोहफा, इकॉनमी को बूस्टर डोज
- महिलाओं के लिए 2 करोड़ रुपये तक के लोन की घोषणा, बिहार के लिए कई घोषणाएं

निर्मला के पिटारे से पहली बार
क्रांतिकारी बदलाव के लिए कई घोषणाएं

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शनिवार को फाइनेंशियल ईयर 2025-26 का बजट पेश किया। इसमें पहली बार मिडिल क्लास को इनकम टैक्स में राहत देने के साथ-साथ इकॉनमी को बूस्ट करने के लिए भी कई उपायों की घोषणा की गई है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इकॉनमी और आम लोगों की अपेक्षाओं और आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाने की कोशिश की है। बजट में इकॉनमी के छह प्रमुख क्षेत्रों टैक्सेशन, बिजली, शहरी विकास, वित्तीय क्षेत्र, खनन और रेगुलेटरी रिफॉर्म्स में क्रांतिकारी बदलाव के लिए कई घोषणाएं की गई हैं। दूसरी ओर इनकम टैक्स में छूट की सीमा बढ़ाकर 12 लाख रुपये कर दी गई है। इससे मिडिल क्लास को काफी राहत मिली है।

मेडिकल कॉलेजों में 10,000 हजार सीटें जोड़ी जाएंगी

*वित्त वर्ष 2026 में मेडिकल कॉलेजों और अस्पतालों में 10,000 सीटें जोड़ी जाएंगी
*सभी जिला अस्पतालों में डे-केयर कैंसर सेंटर स्थापित करना। * स्कूलों में 50,000 अटल टिंकरिंग लैब स्थापित की जाएंगी।* कौशल विकास के लिए पांच राष्ट्रीय केंद्र स्थापित किए जाएंगे।
* आईआईटी में तकनीकी शोधकर्ताओं के लिए 10,000 फेलोशिप।

नया टैक्स ढांचा इस प्रकार होगा

- 4 लाख रुपये तक की कमाई - शून्य टैक्स
- 4 से 8 लाख रुपये तक की कमाई - 5 प्रतिशत टैक्स
- 8 से 12 लाख रुपये तक की कमाई - 10 प्रतिशत टैक्स
- 12 से 16 लाख रुपये तक की कमाई - 15 प्रतिशत टैक्स
- 16 से 20 लाख रुपये तक की कमाई - 20 प्रतिशत टैक्स
- 20 से 24 लाख रुपये तक की कमाई-25 प्रतिशत टैक्स
- 24 लाख रुपये से ऊपर की कमाई - 30 प्रतिशत टैक्स

बजट की ब्रॉड थीम में ये विषय शामिल

- समावेशी विकास और मध्यम वर्ग के खर्च को बढ़ावा देना, मध्यम वर्ग की खर्च करने की क्षमता में सुधार होगा।
- अगले 5 साल सबका विकास को साकार करने का एक अनूठा अवसर होंगे, सभी क्षेत्रों में विकास होगा।
- विकास को गति देना बजट 2025 का बड़ा फोकस
- गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी शक्ति, गरीब किसानों, महिलाओं और युवाओं के इस बजट अहम घोषणा की गई है। विकसित भारत के तहत शून्य गरीबी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उच्च-गुणवत्ता, सस्ती और व्यापक स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करना है।

बजट में यह हुई घोषणाएं

- राजकोषीय घाटा वित्त वर्ष 2025 में 4.8 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2026 में 4.4 प्रतिशत रहने का अनुमान है
- वित्त वर्ष 2025 में संशोधित पूंजीगत व्यय 10.18 लाख करोड़ रुपये रहने का अनुमान है।
- 10 लाख करोड़ रुपये जुटाने के लिए परिसंपत्ति मुद्रीकरण योजना विकसित की जाएगी।
- बीमा क्षेत्र में एफडीआई 74प्रतिशत से बढ़ाकर 100प्रतिशत किया जाएगा।
- विदेशी निवेश की शर्तों की समीक्षा की जाएगी, सरलीकरण किया जाएगा।
- पेंशन मुद्दों के विनियामक समन्वय के लिए एक प्लेटफॉर्म स्थापित किया जाएगा।

व्यक्तिगत आयकर में बड़े बदलाव

- न्यू टैक्स रिजीम में सालाना 12 लाख रुपये तक की आय पर कोई आयकर नहीं।
- 75,000 रुपये की मानक कटौती के कारण वेतनभोगी आय के लिए 12.75 लाख रुपये पर कोई कर नहीं।
- करदाताओं के लिए टीडीएस और टीसीएस को व्यावहारिक बनाना।

- वरिष्ठ नागरिकों के लिए कर कटौती की सीमा दोगुनी करके 1 लाख रुपये की गई।
- शिक्षा के लिए भेजे जाने वाले धन पर टीसीएस हटाया गया।
- वार्षिक टीडीएस सीमा 2.4 लाख रुपये से बढ़ाकर 6 लाख रुपये की गई।
- रिटर्न दाखिल करने की समय सीमा 2 वर्ष से बढ़ाकर 4 वर्ष की गई।
- दो मकान वाले लोगों के लिए राहत।
- 10 लाख रुपये तक के शिक्षा ऋण पर टीसीएस हटाया गया।
- टीसीएस सीमा 7 लाख रुपये से बढ़ाकर 10 लाख रुपये की गई।

छोटे कारोबारियों को दी राहत

- एमएसएमई के तकनीकी उन्नयन की सुविधा के लिए स्टार्टअप के लिए 10,000 करोड़ रुपये का नया फंड ऑफ फंड लॉन्च किया जाएगा।
- स्वयं सहायता समूहों के लिए ग्रामीण क्रेडिट कार्ड। बैंक स्वयं सहायता समूह के लिए क्रेडिट स्कोर बनाए रखेंगे।
- 5 लाख महिलाओं, एससी, एसटी के लिए नई योजना। पहली बार उद्यमियों को 2 करोड़ रुपये तक का टर्म लोन मिलेगा।

महिलाओं को 2 करोड़ रुपये तक का लोन : बजट में महिलाओं के लिए भी कई घोषणाएं की गई हैं। वे महिलाएं जो पहली बार कारोबार करने जा रही हैं, उन्हें 2 करोड़ रुपये तक का लोन मिलेगा। अभी इसका फायदा 5 लाख महिलाओं को मिलेगा। देश में मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ाने के लिए नेशनल मैन्युफैक्चरिंग मिशन लॉन्च किया जाएगा। इसमें 'मेक इन इंडिया' को सपोर्ट करने के लिए छोटी, मध्यम और बड़ी इंडस्ट्रीज को सपोर्ट किया जाएगा।साथ ही भारत को खिलौने सेक्टर में वैश्विक हब बनाने का भी प्रावधान रखा है। इसके लिए एक राष्ट्रीय योजना लागू की जाएगी। इस योजना के अंतर्गत कौशल और निर्माण तंत्र के विकास से निर्मित खिलौने आत्मनिर्भर भारत के ब्रांड के साथ विश्व पटल पर प्रस्तुत होंगे।

कैंसर, दुर्लभ बीमारियों पर राहत

रोगियों, विशेषकर कैंसर, दुर्लभ बीमारियों और अन्य गंभीर दीर्घकालिक बीमारियों से पीड़ित रोगियों को राहत प्रदान करने के लिए सरकार ने 36 जीवनरक्षक औषधियों को मूल सीमा शुल्क (बीसीडी) से पूर्ण छूट वाली औषधियों की सूची में जोड़ने का प्रस्ताव किया है । सरकार ने 6 जीवन रक्षक दवाओं को भी सूची में शामिल करने का प्रस्ताव किया है, जिन पर 5त्न की रियायती सीमा शुल्क लगेगा । उपरोक्त दवाओं के विनिर्माण के लिए थोक दवाओं पर भी क्रमशः पूर्ण छूट और रियायती शुल्क लागू होगा।

बिहार चुनाव से पहले

बजट में बिहार को 5 'तोहफे', मोदी सरकार का का मास्टर स्ट्रोक?

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आज लोकसभा में बजट पेश किया। इस बजट में कई राज्यों के लिए अलग-अलग तरह की घोषणा की गई। इनमें बिहार के लिए भी 5 बड़े एलान किए गए। अब इन एलानों को सियासी गलियारों में इस साल प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनावों के मद्देनजर मास्टर स्ट्रोक के तौर पर देखा जा रहा है। चलिए जानते हैं बिहार के लिए किए गए वो 5 बड़े एलान क्या हैं?

बिहार में मखाना बोर्ड: * मखाना के उत्पादन, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और विपणन में सुधार के लिए राज्य में मखाना बोर्ड की स्थापना की जाएगी। इन गतिविधियों में लगे लोगों को एफपीओ में संगठित किया जाएगा। बोर्ड मखाना किसानों को सहायता और प्रशिक्षण सहायता प्रदान करेगा और यह सुनिश्चित करने के लिए भी काम करेगा कि उन्हें सभी प्रासंगिक सरकारी योजनाओं का लाभ मिले।

खाद्य प्रसंस्करण के लिए सहायता: 'पूर्वोदय' के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता के अनुरूप, बिहार में राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी, उद्यमिता और प्रबंधन संस्थान की स्थापना की जाएगी।

आईआईटी पटना में क्षमता का विस्तार: आईआईटी, पटना में छात्रावास और अन्य बुनियादी ढाँचे की क्षमता का विस्तार किया जाएगा। पिछले 10 वर्षों में 23 आईआईटी में छात्रों की कुल संख्या 65,000 से 1.35 लाख तक 100 प्रतिशत बढ़ गई है।

बिहार में ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट: राज्य की भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए बिहार में ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट की सुविधा दी जाएगी।

मिथिलांचल में पश्चिमी कोशी नहर परियोजना: पश्चिमी कोशी नहर ईआरएम परियोजना के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी, जिससे बिहार के मिथिलांचल क्षेत्र में 50,000 हेक्टेयर से अधिक भूमि पर खेती करने वाले बड़ी संख्या में किसानों को लाभ होगा।

रक्षा

केंद्र सरकार ने बढ़ाया रक्षा बजट

केंद्र सरकार ने रक्षा बजट के लिए 681210 करोड़ रुपये का आवंटन किया है। यह रकम पिछले साल के 621940 करोड़ रुपये के परिव्यय से अधिक है। वहीं कुल पूंजीगत परिव्यय 192387 करोड़ रुपये आंका गया है। राजस्व व्यय 488822 करोड़ रुपये रखा गया है। पेंशन के लिए 160795 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है। केंद्र सरकार ने रक्षा बजट में इजाफा किया है।केंद्र सरकार ने रक्षा बजट के लिए 6,81,210 करोड़ रुपये का आवंटन किया है। यह रकम पिछले साल के 6,21,940 करोड़ रुपये के परिव्यय से अधिक है। वहीं कुल पूंजीगत परिव्यय 1,92,387 करोड़ रुपये आंका गया है। राजस्व व्यय 4,88,822 करोड़ रुपये रखा गया है। पेंशन के लिए 1,60,795 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है।

यह हुए सस्ते

इलेक्ट्रिक कारें, फोन, एलईडी, 36 जीवनरक्षक दवाएं सस्ती; सोना-चांदी में बदलाव नहीं,सरकार की बजट घोषणाओं के बाद कुछ चीजें सस्ती होंगी, कुछ के दाम बढ़ेंगे। लेकिन सोने-चांदी पर कस्टम ड्यूटी में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

यह महंगे हुए

स्मार्ट मीटर, सोलर सेल, आयातित जूते, आयातित मोमबत्तियां, आयातित नौकाएं और अन्य जहाज, पीवीसी फ्लेक्स फिल्में, पीवीसी फ्लेक्स शीट, पीवीसी फ्लेक्स बैनर, कुछ आयातित बुने हुए कपड़े, इंटरैक्टिव फ्लैट पैनल डिस्प्ले जो पूरी तरह से निर्मित इकाइयों के रूप में आयात किए जाते हैं। वहीं, फ्लैट पैनल डिस्प्ले, टीवी डिस्प्ले और फैबरिक खरीदना महंगा होगा।

पेज 1 का शेष

मध्यवर्ग की कामधेनु को रिझा कर लक्ष्मी बरसाने की कामना का बजट

मध्यवर्ग के अलावा देश में बहुत बड़ा वोट बैंक किसानों का है। मोदी सरकार ने इस बजट में किसानों को कर्ज मुहैया कराने वाले किसान क्रेडिट कार्ड की लिमिट 3 लाख से बढ़ाकर 5 लाख कर दी है। सरकार के मुताबिक इससे 7.7 करोड़ किसान, पशुपालकों और मछुआरों को लाभ होगा। किसान क्रेडिट कार्ड योजना 1998-99 में अटलजी की सरकार ने शुरू की थी। अब इसका लाभ लेने वाले किसानों की संख्या 7 करोड से ज्यादा हो चुकी है। देश की आर्थिकी को मोड़ देने वाला बड़ा ऐलान बजट में भारत को खिलौना निर्माण का हब बनाने का है। इस क्षेत्र पर चीन का दबदबा है। भारत की आबादी में करीब 43 करोड़ बच्चे हैं, जिनमें आधे से ज्यादा खिलौनो से खेलने वाले आयु वर्ग के हैं। ऐसे में भारतीय खिलौनो के लिए घरेलू बाजार तो है ही साथ में विदेशों में निर्यात की संभावनाएं हैं। बशर्ते कि हम उच्च गुणवत्ता, विविधता और तकनीक वाले खिलौने वाजिब दर पर बना सकें। इसके अलावा दालों का उत्पादन बढ़ाने के लिए 6 साल का मिशन, जूता चप्पल उत्पादों के लिए विशेष योजना, सभी सरकारी स्कूलो में ब्रॉड बैंड, इलेक्ट्रिक कारों को बढ़ावा आर्थिकी को तेज करने वाले उपाय हैं। राजनीतिक दृष्टि से बिहार को खास तौर पर उपकृत किया गया है। जिसमें मखाना बोर्ड का गठन प्रमुख है। याद रहे कि देश में मखाने का सर्वाधिक उत्पादन बिहार में होता है। मखाना ऐसी वस्तु है जो मंगल कार्य से लेकर मय्यत तक में चढ़ती है। माना जा सकता है कि मखाने के जरिए बिहार में आर्थिक विकास की नया मंगल गीत रचने की कोशिश है। साथ ही बिहार में ग्रीन एयरपोर्ट, राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमिता व प्रबंध संस्थान तथा वेस्टर्न कोसी केनाल प्रोजेक्ट को मंजूरी भी बड़ी घोषणाएं हैं। वहां एनडीए का पूरा फोकस फिर से सत्ता में लौटने पर है। हालांकि इन सबके बाद भी ?बिहार बीमारू राज्य के अभिशाप से कब निकलेगा, यह कोई नहीं बता सकता।

वैसे बिहार के प्रति यह अतिरिक्त राजनीतिक प्रेम केन्द्रीय वित्त मंत्री के परिधान में भी दिखा। वो इस बार बिहार की मशहूर मधुबनी साड़ी पहन कर बजट पेश करने आईं। वित्तमंत्री के रूप में उनका यह अब तक सबसे छोटा यानी 77 मिनट में खत्म होने वाला भाषण था। उधर विपक्ष को बजट में कुछ भी 'खास' नजर नहीं आया। उसका तर्क था कि आर्थिक विकास के आंकड़ों से बहलाने की जगह सरकार को प्रयागराज महाकुंभ में हुई भगदड़ में मरने वालों के आंकड़े देश को बताने चाहिए।

हैरानी की बात यह रही कि मध्य वर्ग को राहत की बरसात शेयरमार्केट को नहीं लुभा पाई। बाजार उछलने के बजाए नीचे चला गया। वैसे आम आदमी की खुशी और बाजार की गमक में कोई सीधा सम्बन्ध नहीं होता। वह किन सेंटीमेंट पर उछलता और किन पर धराशायी होता है, यह खोज का विषय है। हालांकि अर्थ शास्त्रियों का कहना है कि गरीब को राहत की संवेदनाओं को सकारात्मक रूप से समझने में बाजार को वक्त लगता है और जरूरी नहीं कि वह समझ ही जाए। बाजार की तुलना में सियासत जन सामान्य के जज्बात को ज्यादा संवेदनशीलता से समझ पाती है। देर से ही सही, मध्यमवर्ग की पुकार को वित्त मंत्री ने समझा है। इसका राजनीतिक फलित आगे उजागर होगा। यानी कामधेनु खुश तो लक्ष्मी का प्रसन्न होना बनता ही है। आगे-आगे देखिए, होता है क्या।

परिक्रमा

एक-दूसरे से भिड़ते नरेन्द्र मोदी और सोनिया गांधी

अरुण पटेल
प्रबंध संपादक, सुबह सवेरे

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जब से तीसरी बार सत्ता संभाली है और भाजपा के अल्पमत में होने के बाद बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू की बैसाखियों पर आरूढ़ होकर जो अपनी सरकार का पहला पूर्ण बजट लाने का संकेत दिया है उसमें उन्होंने राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू के अभिभाषण में यह दावा कराया है कि भारत को ज्ञान की महाशक्ति बनायेंगे तो वहीं दूसरी ओर कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने राष्टपति के अभिभाषण पर मीडिया से चर्चा करते हुए जो प्रतिक्रिया दी है उससे देश की राजनीति में एक नया विवाद खड़ा हो गया है और भाजपा और कांग्रेस एकदम से आमने-सामने आ गये हैं। यहां तक कि मोदी और सोनिया भी एक-दूसरे से सीधे-सीधे टकराने की मुद्रा अख्तियार किये हुये नजर आये हैं।

शुक्रवार 31 जनवरी को मीडिया से चर्चा करते हुये सोनिया गांधी ने कहा कि अंत तक राष्ट्रपति बहुत थक गई थीं और वह बड़ी मुश्किल से बोल पा रही थीं। इसमें नई रंगत लाते हुये लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने राष्ट्रपति के अभिभाषण को बोरिंग बता डाला। भाजपा को तो बस मानो एक अवसर की तलाश थी और जैसे ही उसे कोई ढीली-ढाली गेंद मिलती है तो वह छक्का मारने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने देती और कांग्रेस पर पूरी ताकत से चढ़ाई कर देती है। भाजपा ने इसे तत्काल आदिवासी के अपमान से जोड़ दिया और उसने आरोप लगाया कि कांग्रेस के नेताओं ने आदिवासी महिला राष्ट्रपति का अपमान किया है और इसके साथ ही उसने एक नया मुद्दा बना डाला। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा का कहना था कि राष्ट्रपति के लिए जानबूझकर ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है जो कांग्रेस की अभिजात्य, गरीब और आदिवासी विरोधी प्रकृति को दर्शाता है। कांग्रेस राष्ट्रपति और आदिवासी समुदाय से बिना शर्त माफी मांगे। लोकसभा सदस्य और कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने स्थिति को संभालते हुए कहा कि मेरी माँ 78 साल की हैं और राष्ट्रपति का सम्मान करती हैं। उनका राष्ट्रपति का अपमान करने का इरादा नहीं था। उनके बयान को तोड़-मरोडक़र प्रस्तुत किया गया है। सोनिया के खिलाफ सीधे-सीधे मोर्चा प्रधानमंत्री मोदी ने खोला और दिल्ली के चुनावी मैदान में यह टिप्पणी सोनिया गांधी और राहुल गांधी के बिना की कि 'कांग्रेस के शाही परिवार को आदिवासी दलित, पिछड़े गरीब लोगों को आगे बढ़ाना कतई पसंद बर्दाश्त नहीं है और अपमान करना उनकी आदत है।' मोदी ने दिल्ली के द्वारिका में एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए टिप्पणी की और उन्होंने कांग्रेस की एक प्रकार से घेराबंदी की। उन्होंने 'एक्स' पर लिखी एक पोस्ट में यह भी लिखा कि 'शाही परिवार राष्ट्रपति के साथ ही हमारे गरीब भाई-बहिनों, एससी-एसटी और ओबीसी समुदाय से माफी

मांगना चाहिये', यहां तक कि सोनिया गांधी की बात राष्ट्रपति को भी चुभ गई और राष्ट्रपतिभवन से एक बयान जारी हुआ जिसमें कहा गया कि कांग्रेस के नेताओं की ऐसी टिप्पणियां स्पष्ट रूप से उच्च पद की गरिमा को ठेस पहुंचाती हैं, और अस्वीकार है। हाशिये पर पड़े समुदायों, महिलाओं और किसानों के लिये बोलना कभी भी थकाने वाला नहीं हो सकता। यह नेता हिंदी जैसी भारतीय भाषाओं के मुहावरे और संभाषण से परिचित नहीं हैं, ऐसी टिप्पणियां दुर्भाग्यपूर्ण हैं।

18वीं लोकसभा के बजट सत्र के पहले दिन राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने संसद के दोनों सदनों के संयुक्त अधिवेशन में लगभग 59 मिनिट का भाषण दिया और उनके इस अभिभाषण पर कांग्रेस नेताओं की टिप्पणी ने विवाद पैदा कर दिया। टिप्पणियां सदन के बाहर जा लेकिन संसद परिसर में की गई थीं। संसद परिसर में ही सत्र शुरू होने के पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विपक्ष पर भी निशाना साधा और कहा कि 10 सालों में यह पहला सत्र है जब कोई विदेशी चिंगारी नहीं सुलगी। हमारे देश में कई लोग इन चिंगारियों को हवा देने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते, वे हमेशा तैयार रहते हैं। विरोधियों पर तंज कसते समय मोदी ने कहा था कि 2014 से लेकर अभी तक का यह पहला संसद सत्र है जब संसद शुरू होने से पहले विदेशी चिंगारी नहीं सुलगी और यहां के लोगों ने उसे हवा नहीं दी। मैं कह सकता हूँ कि 10 साल में यह पहला सत्र है जिसमें किसी विदेशी ताकत ने आग लगाने की कोशिश नहीं की।

दिल्ली के नतीजों पर सबकी नजर

5 फरवरी को दिल्ली में विधानसभा चुनाव के लिये मतदान होने वाला है और इसके परिणामों पर सत्ता पक्ष-विपक्ष दोनों ही अपनी-अपनी नजरें गड़ाये हुये हैं और इस बात का इंतजार कर रहे हैं कि ये चुनाव परिणाम किस दिशा में जाते हैं। सत्ता पक्ष को इस बात का इंतजार है कि दिल्ली में केजरीवाल यदि चुनाव जीतते हैं तो विपक्ष एकजुट होकर और अधिक हमलावर होगा इसके साथ ही विपक्ष में कलह भी होगी क्योंकि केजरीवाल और राहुल गांधी दोनों ने 'इंडिया ब्लाक' में होते हुए भी एक-दूसरे पर तीखा हमला बोला । यदि केजरीवाल हार जाते हैं तो इससे इस बात की पुष्टि होगी कि प्रधानमंत्री मोदी जिस दिशा में देश को आगे बढ़ाना चाहते हैं उस पर देश की राजधानी के मतदाताओं ने भी अपनी मोहर लगा दी है। वे अधिक उत्साह के साथ अपनी योजनाओं को आकार देने में जुट जायेंगे तो वहीं दूसरी ओर यदि केजरीवाल दिल्ली में जीत जाते हैं तो 'इंडिया गठबंधन' में शामिल दलों का हौसला बढ़ेगा और उन्हें लगेगा कि लोकसभा चुनाव में भाजपा के पिछडने का जो सिलसिला जो आरंभ हुआ था वह अभी भी कमोबेश जारी है। क्योंकि दिल्ली का चुनाव भाजपा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के चेहरे को आगे रखकर ही लड़ रही है। जबकि यदि दिल्ली में भाजपा को अपेक्षित सफलता नहीं मिलती है तो फिर इंडिया गठबंधन के नेता इसी साल के अंत में होने वाले बिहार विधानसभा के चुनाव में अधिक जोशखरोश के साथ उतर सकेंगे क्योंकि वहां पर तो महागठबंधन बना हुआ है जिसमें इंडिया गठबंधन में शामिल दलों के अलावा कुछ अन्य दल भी शामिल हैं जो वामपंथी रूझान रखते हैं। केजरीवाल की जीत और हार का अपना राजनीतिक महत्व है जिस पर सबकी निगाहें लगी हुई हैं। फरवरी के बाद इन नतीजों का देश के रजनीतिक फलक पर असर पड़ेगा ही।

यह भी...

केंद्रीय चुनाव आयोग पर भी केजरीवाल ने हमला बोल दिया है और चुनाव आयोग ने भी उनसे सबूत मांग लिये हैं। यमुना के जहरीले पानी के आरोप के मामले में आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने यहां तक कह डाला कि दिल्ली की किसी एक सीट से वे चुनाव लड़ रहे हैं। केजरीवाल जब बोलते हैं तो फिर बोलते जाते है और आरोप लगाते हैं तो फिर आरोप लगाते जाते हैं। उनका कहना था कि राजीव कुमार सेवा निवृत्त होने के बाद की नौकरी तलाश रहे हैं इसलिये वह राजनीति कर रहे हैं। राजीव कुमार ने यमुना के पानी में जहर मिलाने के सबूत केजरीवाल से मांगे हैं।

केसीसी से एमपी के 72 लाख किसानों को फायदा

लोन की लिमिट अब 5 लाख रुपए

12 लाख स्ट्रीट वेंडर्स को बिना गारंटी 30 हजार का कर्ज

भोपाल (नप्र)। केंद्र सरकार ने बजट में किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) के लोन की सीमा 3 लाख से बढ़ाकर 5 लाख रुपए करने का ऐलान किया है। इससे मध्यप्रदेश के 72 लाख से अधिक किसानों को फायदा होगा। इसी तरह पीएम स्व-निधि योजना के तहत अपना स्ट्रीट फूड बिजनेस शुरू करने वालों के लिए अब बैंक लोन की अधिकतम सीमा 30 हजार रुपए कर दी गई है। अब तक 10 हजार रुपए तक का लोन मिलता था। राज्य में करीब 12 लाख लोगों को इसका फायदा होगा। खास बात ये है कि इस बार केंद्र सरकार के बजट को तैयार करने में एमपी के दो आईएएस अफसरों की भी अहम भूमिका रही है। बजट में केंद्रीय योजनाओं में क्या-क्या बदलाव किए हैं और इसका मध्य प्रदेश को कितना फायदा मिलेगा,

एमपी का कैंसर डे केयर, अब पूरे देश में बनेंगे: स्टेट कैंसर नोडल अफसर डॉ. सीएम त्रिपाठी बताते हैं, कैंसर रोगियों के लिए डे केयर सेंटर की पहल मध्यप्रदेश से ही हुई थी। मिशन से जुड़े कैंसर विशेषज्ञ डॉ. दिनेश पंडारकर ने डॉ. जीके रथ के साथ मिलकर 2014 में प्रदेश के 51 जिलों में कैंसर डे केयर से शुरुआत की थी। इसके बाद ओडिशा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात के सभी जिलों में कैंसर डे केयर शुरू किए जा चुके हैं। अब तक नौ राज्यों के 198 जिलों में यह कार्यक्रम चल रहा है। डॉ. त्रिपाठी बताते हैं, अब तक यह कार्यक्रम राज्य अपने स्तर पर चला रहे थे, अब सरकार ने बजट में घोषणा कर दी है तो केंद्र के स्तर पर काम होगा और पूरे देश में सभी राज्यों के सभी जिलों में मरीजों को यह सुविधा मिल सकेगी।

मप्र में मात्र 150 होम स्टे, मुद्रा ऋण से बढ़ेगी संख्या

प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयास तो किए जा रहे हैं लेकिन कई स्तरों पर सुधार की जरूरत है। प्रदेश में अभी भी मात्र 150 होम स्टे ही रजिस्टर्ड हैं जबकि उत्तराखंड में इनकी संख्या पांच हजार 468 पहुंच चुकी है। एक्सट्रीम एडवेंचर के डायरेक्टर और होम स्टे को प्रमोट करने में जुटे पुनीत चतुर्वेदी बताते हैं, अभी तक होम स्टे के लिए मुद्रा ऋण नहीं मिलता था। मध्यप्रदेश में होम स्टे की एक यूनिट शुरू करने पर 2.5 लाख की सब्सिडी जरूर मिलती है, लेकिन कम दर पर मुद्रा लोन मिलेगा तो निश्चित तौर पर होम स्टे की संख्या बढ़ेगी। होम स्टे विलेज और एग्रो टूरिज्म की धुरी हैं। रिसॉर्ट और बड़े होटल अपर क्लास के लिए होते थे, अब होम स्टे कल्चर बढ़ने से कम कीमत में प्रकृति के नजदीक रहते हुए ठहरने का विकल्प मिलता है।

सीतारमण की बजट बनाने वाली टीम में एमपी के थे दो अफसर

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 2025-26 का जो बजट पेश किया है, उसे बनाने में एमपी के दो अफसरों की भी अहम भूमिका रही है। इनमें 1991 बैच के एमपी कैडर के आईएएस मनोज गोविल और 1993 बैच की आईएएस दीप्ति गौड़ मुखर्जी शामिल हैं। गोविल इस समय वित्त मंत्रालय में व्यय विभाग के सचिव की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। वहीं दीप्ति गौड़ मुखर्जी कॉर्पोरेट अफेयर्स की सचिव हैं।

जापान यात्रा से लौटकर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नई दिल्ली में की प्रेस कॉन्फ्रेंस

सीएम जापान से लाए खुशखबरी, कई बड़ी कंपनियां कर सकती हैं एमपी में निवेश

***जापान-मध्यप्रदेश औद्योगिक सहयोग फोरम की स्थापना होगी**
***अब जापान के मॉडर्न मॉडल पर होगा मध्यप्रदेश का विकास**
जीआईएस में आकर्षण का केंद्र होंगे ऑटो-टेक्सटाइल एक्सपो

नई दिल्ली/भोपाल। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जापान से राज्य के लिए बड़ी खुशखबरी लाए हैं। उनकी चार दिवसीय यात्रा के दौरान जापान की कई बड़ी कंपनियों ने यहां निवेश करने में गहरी रुचि दिखाई है। राज्य में जापान-मध्यप्रदेश औद्योगिक सहयोग फोरम की स्थापना के प्रस्ताव को मंजूरी मिली है। प्रदेश में जल्द जापानी इंडस्ट्रियल पार्क, कौशल विकास केंद्र और स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग हब की स्थापना हो सकती है। इसके अलावा सरकार ने राज्य में जापान प्लस सेल स्थापित करने का फैसला किया है। इसके तहत एक डेडिकेटेड टीम जापान के निवेशकों के साथ संपर्क और फॉलोअप करेगी। इतना ही नहीं, प्रदेश के विकास के लिए अब यहां जापानी मॉडल अपनाया जाएगा। इस तरह मोहन सरकार के मिशन ज्ञान (गरीब-युवा-अन्नदाता-नारी शक्ति) को पूरा करने में जापान बड़ी भूमिका अदा कर सकता है। जापान के निवेश करने से प्रदेश में औद्योगिक विकास, रोजगार, स्व-रोजगार सहित कई सेक्टर में जबरदस्त बदलाव आ जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस यात्रा के दौरान जापान के उद्योगपतियों-निवेशकों को ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट (GIS) का न्योता भी दिया।

गौरतलब है कि प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 1 फरवरी की शाम स्वदेश लौटे। उन्होंने राजधानी नई दिल्ली में मीडिया को बताया कि मध्यप्रदेश की ये महत्वपूर्ण जापान यात्रा राज्य के लिए अनेक संभावनाएं लेकर आई है।

टोक्यो और ओसाका में आयोजित बैठकों-रोड-शो में जापानी कंपनियों ने मध्य प्रदेश में गहरी रुचि दिखाई है। जापान भारत का पांचवां सबसे बड़ा निवेशक है, जिसने पिछले दो दशकों में भारत में 38 बिलियन डॉलर से अधिक का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश किया है। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार लगभग 20 बिलियन डॉलर का है, जो निरंतर बढ़ रहा है। मध्यप्रदेश और जापान के बीच मजबूत व्यापारिक रिश्ते रहे हैं।

जापान को होने वाला निर्यात लगातार बढ़ रहा है

सीएम डॉ. यादव ने बताया कि मध्यप्रदेश में पहले से ही कई जापानी कंपनियां सफलतापूर्वक काम कर रही हैं। ब्रिजस्टोन ने पीथमपुर में विश्वस्तरीय टायर प्रोडक्शन प्लाटं लगाया है। यह प्लांट रोजगार सृजन और निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। पैनासोनिक जैसी दिग्गज कंपनी ने प्रदेश में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। एनएसके, सानोह और कामात्सु जैसी जापानी कंपनियां भी प्रदेश में काम कर रही हैं। ये कंपनियां ऑटोमोटिव और मशीनरी क्षेत्र में अहम योगदान दे रही हैं। मध्यप्रदेश से जापान को होने वाला निर्यात निरंतर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि जापान यात्रा के दौरान बैठकों से इन व्यापारिक संबंधों को और मजबूती मिलेगी। साथ ही नए निवेश और व्यापारिक अवसर भी खुलेंगे।

मंत्री-गवर्नर से क्या हुई बात

सीएम डॉ. मोहन यादव ने बताया कि टोक्यो की गवर्नर युरिको कोइके के साथ हुई बैठक ऐतिहासिक थी। कोइके के साथ सरकार की बैठक में शहरी विकास के नए आयामों पर चर्चा हुई। टोक्यो मेट्रोपॉलिटन गवर्नमेंट की विशेषज्ञता का लाभ प्रदेश के शहरों को मिलेगा। भोपाल और इंदौर के लिए मेट्रो रेल प्रौद्योगिकी, स्मार्ट सिटी समाधान, जल प्रबंधन और कचरा प्रबंधन में विशेष सहयोग प्राप्त होगा। टोक्यो के विकास मॉडल को प्रदेश में अपनाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने बताया कि जापान के विदेश मंत्रालय में संसदीय उप-मंत्री हिसाशी मात्सुमोतो के साथ भी अहम बैठक हुई। इस बैठक में प्रदेश में जापानी निवेश को सुगम बनाने के लिए विशेष प्रयास करने पर सहमति बनी। व्यापार मिशन का आदान-प्रदान, कौशल विकास में जापानी विशेषज्ञों की भागीदारी, जापान-मध्य प्रदेश औद्योगिक सहयोग फोरम की स्थापना के प्रस्ताव को मंजूरी मिली है।

इनके साथ हुई अहम चर्चा

सीएम डॉ. यादव ने बताया कि जापान के भूमि-बुनियादी ढांचा मंत्रालय के मंत्री यासुशी फुरुकावा के साथ बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। मध्यप्रदेश में हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर की संभावनाओं का अध्ययन किया जाएगा।

बजट पर म.प्र. के नेताओं ने क्या कहा

आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का बजटः शिवराज सिंह

भोपाल। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि ये बजट आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का बजट है। इसमें विश्वास की महक है, विकास की ललक है और विकसित भारत के निर्माण की तड़प है। बजट में कृषि और किसानों के कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। कोई कल्पना भी नहीं करता था कि इनकम टैक्स में छूट की सीमा 12 लाख तक हो जाएगी।

बजट में हर वर्ग का ध्यान रखाः भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा कि आम बजट में देश के गरीब, किसान, नौजवान, मध्यमवर्गीय परिवार, व्यापारी, पिछड़ा, महिला, श्रमिक समेत हर वर्ग का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है। बजट 2025 में नए भारत का विजन व समृद्ध और डिजिटल भारत का आधार स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है।

ये ऐतिहासिक बजटः विजयवर्गीय

मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने ट्वीट कर लिखा, केंद्रीय बजट 2025-26 हर वर्ग के कल्याण और सशक्तिकरण की भावना से परिपूर्ण ऐतिहासिक बजट है। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वप्न के अनुरूप समृद्ध, आत्मनिर्भर और वैभवशाली भारत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। यह जन-जन का बजट है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 36 जीवन रक्षक दवाओं पर सीमा कर हटाकर ऐतिहासिक फैसला लिया है।

मंत्री कृष्णा गौर बोलीं- ये मध्यम वर्ग का बजट

मंत्री कृष्णा गौर ने कहा- यह 2047 के भारत का बजट है। देश के चहुंमुखी विकास का बजट है। पीएम नरेंद्र मोदी के सपनों का बजट है। किसान, महिला, युवा, गरीबों, मध्यम वर्ग का बजट है। रोजगार के लिए स्टार्टअप, स्किल डेवलपमेंट के प्रावधान हैं। मध्य प्रदेश को केंद्र का पर्याप्त अंश मिला है। यह एमपी के विकास का भी बजट है।

मंत्री राकेश सिंह बोले- मध्यम वर्ग को राहत देने वाला

राकेश सिंह ने बजट को हर वर्ग की अपेक्षाओं और आवश्यकताओं को पूरा करने वाला बताया। इससे मध्यम वर्ग को इतनी बड़ी राहत मिलेगी। पंद्रह लाख रुपये तक की आय पर आयकर से छूट देना एक ऐतिहासिक कदम है। यह लंबे समय से लोगों की मांग थी कि आयकर छूट की सीमा बढ़ाई जाए। बजट समाज के हर वर्ग की अपेक्षाओं को पूरा करने वाला है।

भारतीय अर्थ व्यवस्था को गति देने वाला है नया बजट : खाद्य मंत्री राजपूत

खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किये गए वर्ष 2025-26 के आम बजट को सभी वर्गों के लिए फायदेमंद बताते हुए कहा कि इस बार बजट में सभी वर्गों का ध्यान रखा गया है। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि बजट भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देने वाला है। गरीब, युवा और महिलाओं के लिए कई योजनाओं के जरिए सरकार ने यह संकेत दिया है कि उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने की दिशा में यह बजट एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है।

विकसित भारत का रोड़मैप है केंद्रीय बजट : उप मुख्यमंत्री देवड़ा

उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने कहा है कि केन्द्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा प्रस्तुत वर्ष 2025-26 का बजट प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के विजन को साकार करने का रोड़मैप है।उप मुख्यमंत्री श्री देवडा ने कहा कि 12 लाख रूपये तक की सालाना आय पर आयकर न लगाकर एक बड़े वर्ग को राहत दी है। यह प्रधानमंत्री श्री मोदी की सरकार का क्रांतिकारी कदम है।

यह बजट विकास और कल्याण मूलक : मंत्री सारंग

सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने केन्द्रीय बजट 2025-26 को 'विकास और कल्याण मूलक' बताते हुए इसकी सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रस्तुत यह बजट 'ज्ञान पर ध्यान' मंत्र को साकार करता है और देश के हर वर्ग को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि बजट में समाज के हर वर्ग–गरीब, युवा, किसान और महिलाओं को सशक्त बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया है।

जीतू पटवारी ने कहा- विकास दर नीचे, भाषण ऊंचे

दूसरी ओर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पटवारी ने कहा कि देश में सरकारें नहीं बच रही हैं, केवल चुनाव हो रहे हैं। विकास दर नीचे है, लेकिन भाषण ऊंचे स्तर पर हैं। उद्योगपतियों के सोलह लाख करोड़ रुपए दस साल में माफ कर दिए गए, लेकिन किसानों के लिए कोई ठोस काम नहीं हो रहा है।

नेता प्रतिपक्ष बोले- बजट जुमलों की पोटली

उधर, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा है कि मोदी सरकार का बजट 2025 भी जुमलों की पोटली निकला है। महंगाई, बेरोजगारी और गिरती अर्थव्यवस्था पर कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं, केवल बड़े-बड़े वादों का मायाजाल है।

कमलनाथ बोले- केंद्र सरकार का बजट निराशाजनक

पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने बजट को निराशाजनक बताया। उन्होंने कहा इसमें प्रदेश के लिए विशेष प्रावधान न नहीं हैं। अर्थव्यवस्था पहले से ही लचर है और प्रदेश लगातार कर्ज के दलदल में डूबता जा रहा है। किसानों को गेहूं और धान का बढ़ा हुआ एमएसपी देने, किसानों की आमदनी दोगुनी करने, लाडली बहनों को ?3000 महीने देने जैसे वादों को पूरा करने के लिए केंद्र सरकार ने राज्य को कोई मदद नहीं दी है। बजट मध्यम वर्ग को आयकर में जो छूट दी गई है, वह ऊंट के मुंह में जीरा से अधिक कुछ नहीं है।

कठघरे में साँसे: दास्ताने तजुर्बात-ओ-हवादिस

प्रतिभा

डॉ. सुधीर सक्सेना

विभूति झा हम सबके लिये सुपरचित नाम हैं। वह अपनी लेखकीय प्रतिभा नहीं, वरन अपने सरोकारों के लिये जाने जाते हैं। उनका नाम पहले पहल जेरे-खबर और सुर्खियों में आज से 40 साल पहले तब आया था, जब भोपाल में विश्व की भीषणतम औद्योगिक त्रासदी घटी थी। भोपाल में दो और तीन दिसंबर, सन 1984 की दरम्यानी रात ज़हरीली गैस रिसन के हादसे के ज़ख्म बिलाशक भरे नहीं हैं। यह हादसा दरअसल आम लोगों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, वैज्ञानिकों और चिकित्सकों के लिए सर्वथा भयावह, किंतु नया तजुर्बा था। इस तजुर्बे की जड़े बहुराष्ट्रीय निगमों के विकराल और नफ़ाखोर अमानुषिक-ऑक्टोपसी चरित्र से जुड़ी हुई थी और इसने हमारी व्यवस्था के खोट और खुरंट को उजागर के साथ ही सरकार और न्यायपालिका को कठघरे में खड़ा कर दिया था।

वर्षों के मान से दो बीसियां गुजर गयीं। इसे दुर्भाग्य कहें या विडंबना कि इस त्रासदी का हमारे पास कोई प्रामाणिक वृतांत नहीं है, जिससे हम इसकी विभीषिका, कारणों, परिणामों और तज्जन्य संदर्भों को जान सकें। इस लिहाज से विभूति झा की किताब 'कठघरे में साँसें - भोपाल गैस त्रासदी के चार दशक', जिसका संपादन वरिष्ठ पत्रकार राजेश बादल ने किया है, न सिर्फ एक रिक्तिका को भरती है बल्कि एक ऐसा प्रामाणिक दस्तावेज प्रस्तुत करती है, जिससे गुजरकर हमारी और भावी पीढ़ी उस जाने-अजाने को शिद्दत से जान सकती है, जिसे जानना अनेक दृष्टियों से जरूरी है और जिसे स्मृति की काल-कोठरी में शनैः शनैः बिला जाने के लिए छोड़ा नहीं जा सकता था। चार दशकों के इस वृतांत में हमें लेखकीय और संपादकीय कौशल के यकसां दर्शन होते हैं। लेखक और संपादक दोनों ही घटनाक्रम के बीच मौजूद रहे हैं। यह किताब सही मायनों में दास्ताने तजुर्बात-ओ-हवादिस है। यह अनगिन त्रासदियों की त्रासद-गाथा है, जिसे एक ऐसे शख्स ने बयां किया है, बखुद गैस पीड़ित है, जिसने लंबा अर्सा गैस पीड़ितों के बीच बिताया, उनके लिए संघर्ष और आंदोलन किया और वकील होने के नाते निचली अदालत से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक समझौते और समर्पण की हुंडियों को ठुकराते हुए सीमित संसाधनों के बूते लड़ाई लड़ी।

जब आप किन्हीं चीजों में 'इन्वॉल्व' या शरीक होते हैं, तो तटस्थ और निस्पृह होकर लिखना और आत्मश्लाघा व महिमा मंडन से बचना कठिन होता हैं।

सुखद है कि विभूति इस खतरे से खुद को बचा ले गये हैं और उन्होंने स्वयं के प्रति पर्याप्त निर्ममता बरती है। इसी के चलते वह इस किताब को प्रामाणिक दस्तावेज की शक्ल देने में कामयाब हुये हैं। राजेश की यह कहना सही है कि विभूति ने अतिरंजित उपमाओं और विश्लेषणों के इकतरफ लेखन से बचते हुये सच्चे और पेशेवर अंदाज में 40 साल का लेखा-जोखा पेश किया है।

विभूति संप्रति भोपाल से जाकर भी भोपाल से जुड़े हुये हैं। यही वजह है कि मंडला के लिये भोपाल छोड़ने के 15 साल और त्रासदी के 37 वर्ष बाद जब वह भोपाल लौटते हैं, तो उन्हें 'गहरी चोट' लगती है। कोविड की चपेट में आये हुये विभूति त्रासदी की दास्तां बयां करने के सन्दर्भ में मार्केज को 'लिविंग टु टैल द टेल% कहकर उदधृत करते हैं। आपबीती और जगबीती लिखते हुये उन्हें बरबस फ्योदार देस्तिोयेव्स्की याद आते हैं और मुक्तिबोध भी। बहरहाल, किताब से गुजरना इस बात की तस्दीक करता है कि अभिव्यक्ति के खतरे उठाते हुए विभूति अपने मकसद में कामयाब हुये हैं और सच के साथ उनका सलूक काबिल तारीफ रहा है।

'कठघरे में साँसे' में किस्सागोई का दिलचस्प और काबिले-दाद पुट है और यह तत्व कृति को अकादेमिक रूखेपन से बचाते हुये पठनीय बनाता है। विभूति ने शुरू में ही फ्लैशबैक का सहारा लिया है और वह इसके जरिये 40 साल के पहले के हादसे को शब्द चित्रित करने में सफल रहे हैं। उन्होंने भुतही और वीरान बस्ती को शब्दों से उकेरा है और अनेक चेहरों-मसलन आलोक झा, हरीश धुर्वे, डॉ. एन.पी. मिश्रा नहीं, तत्समय के मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह और प्रधानमंत्री राजीव गांधी का हवाला दिया है। उन्होंने एम्बुलेंस चेजर वकीलों के बारे में बताया है। वह आपराधिक षडयंत्र का पर्दाफाश करते हैं कि कैसे धारा 120वीं गुपचुप हटायी गयी और यूनियन कार्बाइड के चेयरमैन वारेन एंडरसन की गिरफ्तारी का तमाशा हुआ और कैसे तब के कलेक्टर मोती सिंह और एसपी स्वराज पुरी उन्हें सादर सकुशल छोड़ने गये। वह यूका के अध्यक्ष केशव, महिंद्रा और एमडी वीपी गोखले की 'दिखावा - गिरफ्तारी' का जिक्र करते हैं और सारे घटनाक्रम में अमेरिकी सरकार के सीधे हस्तक्षेप को रेखांकित करते हुए दो टूक लिखते हैं भारतीय न्यायपालिका और न्याय व्यवस्था की नपुंसकता सात दिसंबर 1984 को एंडरसन की तथाकथित गिरफ्तारी और रिहाई से जाहिर हो चुकी थी।

लगभग दो सौ पन्नों की यह किताब आगे इसी निष्पत्ति की कथा और अंतर्कथा कहती है। किताब में जहरीली गैस कांड संघर्ष मोर्चा के गठन और उसके संघर्ष, जन आंदोलन, आस्थ में अनास्था - पलायन की पीड़ा, पीढ़ी दर पीढ़ी संक्रमण मेडिकल रिसर्च और अनुसंधान के हश्र, नेपथ्य की घटनाओं, कार्बाइड के हथकंडों, अदालत में खुली सुनवाई और छिपे समझौते, न्याय के मखौल, मुआवजा प्रकरण के अंततः पटाक्षेप और अदालत के बंधे हाथों का बेबाक चित्रण है। विभूति ने किसी को बख्शा नहीं है और बेहिचक परतें उघाड़ी हैं। अर्जुन सिंह और राजीव गांधी पर उनकी टिप्पणियां दिलचस्प हैं। मोतीलाल वोरा के मुख्यमंत्रित्व को याद करते हुये वह लिखते है - उनके नेतृत्व में सरकार का उद्देश्य आंदोलन को कुचलना था।

इस किताब की खूबी है कि विभूति ने प्रामाणिकता की टेक कहीं भी नहीं छोड़ी है। जब वह मेडिकल रिसर्च की बात करते हैं, तो तालिकाएं प्रस्तुत करते हैं और बताते हैं कि कैसे सरकार ने आईसीएमआर का अनुसंधान औचक रोक दिया। वह एनके सिंह आयोग को सहेतुक बंद करने के लिए राज्य सरकार को आड़े हाथों लेते हैं। 'अंतरिम मुआवजा - अंतरिम जीत' शीर्षक अध्याय सचमुच पठनीय है, जिसमें, जज कीनन और अमेरिका की अपीलीय अदालत के फैसलों के हवाले से वह कहते हैं - यह भारत सरकार की करारी हार थी और कार्बाइड की जीत। आगे के पलों में वह घातक समझौते का जिक्र करते हैं, जो वस्तुतः न्याय से समझौता था। विभूति की पृष्ठ 109 पर प्रदत्त सूचना कि चार मई, सन 1989 का आदेश प्रसारित करने के कुछ ही समय बाद सुप्रीम कोर्ट के तत्कालीन चीफ जस्टिस आरएस पाठक अंतर्राष्टीय न्यायालय 'द हेग' के स्थायी न्यायाधीश बन गये, अव्यक्त शब्दों में अनकही कथा को व्यक्त कर देती है। वह चीफ जस्टिस सब्यसाची मुखर्जी की संदिग्ध परिस्थितियों में मृत्यु और तदुपरांत सीजेआई रंगनाथ मिश्रा की अध्यक्षता में नयी पीठ के सदस्यों के मन्दे भावों को उद्घाटित करते हैं, जो यूका को क्षतिपूर्ति की सभी जिम्मेदारियो से मुक्त करती है और गैस पीड़ितों को उनके कानूनी अधिकारों से वंचित। वह 'सत्य' के प्रति प्रतिबद्धता बरतते हुये यूका के कार्मिक प्रबंधक एक मित्रा और शिक्षाशास्त्री-विधिवेत्ता प्रो. उपेन्द्र बक्षी के आचरण को भी उजागर करते हैं।

किताब बिलाशक लेखक के मानवीय दृष्टिकोण और सरोकारों की बानगी देती है। आज त्रासदी में मृतजनों की स्मृति के नाम पर क्या है? फ़क़त विदेशी कलाकार रूथ वाटरमन की बनाई गैस पीड़ित स्त्री और बच्चे की प्रतिमा, जिसकी स्थापना में अडंगा डालने की कोशिश सरकार ने की थी और आज जिसका कूड़ाघर बन गया हैं। भोपाल के मास्टर प्लान में स्मारक के लिए जगह निर्धारित थी। 40 साल बाद भी उसका अतापता नहीं है। गैस प्रभावित इलाके में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर छोटे-छोटे मंदिर बन गये हैं और स्वयंभू छुटभैये नेताओं के नाम फोटो सहित संगठनों के बोर्ड-बैनर लग गये हैं। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर ने गैस त्रासदी मंत्री रहते करीब 13 साल पहले ऐलान किया था कि जहरीला कचरा जलाने के लिए जर्मनी भेजा जायेगा। अंततः जनवरी 25 में जब जहरीला कचरा जलाने के वास्ते पीथमपुर भेजा गया तो वहां कोहराम मच गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कचरा समय के साथ जहरीलापन खो चुका है, यदि ऐसा है तो उसे अन्यत्र भेजने का क्या औचित्य? 'कठघरे में साँसे' कई जिज्ञासाओं को शांत करने के साथ ही कई सवाल और चिंतायें उपजाती हैं। त्रासदी का सबक यह है कि हमने कोई सबक नहीं लिया। किताब आंदोलन के योद्धाओं को याद करती है। अब्दुल जब्बार, आलोक प्रताप सिंह, सुहासिनी मुले जैसों को याद करना और जगदीश कौशल, आरसी साहू, देवीलाल पाटीदार जैसों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना अच्छा लगता है। विभूति और राजेश ने यत्नपूर्वक गैस त्रासदी पर लगभग मुकम्मल किताब हमें सौंपी है और एक अनमोल और अर्थगर्भी सन्दर्भशाला को विलोपित होने से बचा लिया है।

साये में पुण्य

लघुकथा

सुरेश सौरभ

हाय! बचा लो। बचा लो मर गये मैया.. वह दहाड़े मारकर रो रहा था। तड़प रहा था, पर अस्पताल का कोई डॉक्टर उसे हाथ लगाना नहीं चाह रहा था। तब उसके तीमारदार मुख्य डॉक्टर के आगे रोते हुए गिड़गिड़ाने लगे , सर बचा लीजिए। आस-पास और कोई अस्पताल नहीं है। इस तरह मुँह न फेरिये।

हम क्या करें? डॉक्टर बेरुखी से बोले। आप इन्हें कहीं और ले जाइए?

ऐसा न कहें सर ! हम लोग कुंभ के लिए निकले थे। रास्ते में किसे पता था, यह हादसा हो जायेगा। भगवान के लिये हम पर तरस खाएँ। तड़प रहे युवक के साथ आया एक अधेड़ बोला।

उस तड़पते युवक की ओर एकबारगी नज़र फिराते हुए मुख्य डॉक्टर बोले- आप लोगों की वेशभूषा, गाडियों पर लगे झंडे देखकर मैं समझ गया था कि कुंभ मेले में जा रहे हैं। लेकिन जब कुंभ मेले में हमारे साये पर भी प्रतिबंध है। तब हम मुसलमान होकर तुम्हारा इलाज कैसे करें ?

आप पर कुंभ मेले में पाबंदी लगाने वाले, क्या संसार भर में आप के यश कीर्ति पर पाबंदी लगा सकते हैं? क्या आप के फर्ज ईमान पर कोई पाबंदी लगा सकता हैं? हम अपना-अपना किरदार बस उसकी नजरों में सही-सलामत बनाए रखें। दुनिया के प्रपंच को जाने दें डॉक्टर साहब! उसकी नजर में ईश्वर-अल्लाह एक है, फिर आप उसके बंदे हैं या फिर नीचे वालो के। केसरिया गमछा डाले उनके साथ आया बुजुर्ग बोला।

डॉक्टर- बाबा जी मैं तो बस अपने अंदर पीड़ा बयां कर रहा था, न हम अपने फर्ज से डिगें हैं, न अपने ईमान से, अन्यथा उनमें और हममें क्या फर्क रह जायेगा?सर हमने इलाज शुरू कर दिया। मुख्य डॉक्टर के पास आया जूनियर

डॉक्टर बोला। तीमारदारों की पीठ थपथपा कर मुख्य डॉक्टर बोले-तसल्ली रखिये चोट अधिक नहीं है। आप लोग चिंता न करें। हम आपके साथ हैं। घायल कुंभ दर्शनार्थी का इलाज शुरु हो चुका था। उसके सब साथी मौन धारण किये थे। अब वह सब कभी सामने खडी़ भव्य मस्जिद को निहारते तो कभी सड़क पर उत्साह से जा रहे कुंभ दर्शनार्थियों के रेले को।

दौड़

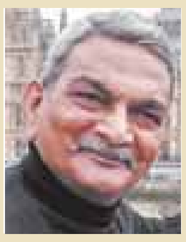

संदीप राशिनकर

दौड़ के लिए
अभिशप्त इस समय में
हर एक को
होना है शामिल
इस अनिवार्य दौड़ में !
हालांकि
ठीक ठीक
कोई नहीं जानता
कि क्यों दौड़ना है ?
क्या है
दौड़ के नियम ?
और
कहां है नियत
इस दौड़ का गंतव्य !
जात - पात , आयुवर्ग की
सीमाओं से
परे है ये दौड़ ,
नियम , नैतिकता ,
खेल भावना जैसे
फिजूल शब्दों से भी
नहीं है सरोकार
इस दौड़ का !
दिशाहीन इस दौड़ में
भागदौड़ है , भगदड़ है
विभ्रम है , असंयम है
कौन गीरा
कौन गया कुचला
यह सब दोयम है
प्रतिस्पर्धा की
इस आपाधापी में !
यह दौड़
शुरू हो जाती है
बच्चे के जन्म के साथ
और कभी कभी तो
जन्म से पहले ही
सिजेरियन के भेष में !
बच्चा
जब खड़ा भी नहीं हो पाता
और न ही
सीख पाता है चलना
तब भी
वह होता है शामिल
इस दौड़ में
हालांकि
उसको लेकर
दौड़ रहे होते है पालक
यूनिट टेस्टों में
हेल्दी बेबी प्रतियोगिताओं में
या किसी
रियलिटी शो में !
अंधी प्रतिस्पर्धा की
इस महा - दौड़ का
नहीं दिखता कोई अंत
यह तो है अनंत
पता नहीं
दौड़ कब खत्म होगी
या
होगी भी की नहीं
पर तय है
खत्म होना
मनुष्य का !
मनुष्यत्व का !

उत्तिष्ठत जाग्रत

अनुपमा अनुश्री

यारा ! वह मोती
ढूँढ़ो जरा!
जो कहता है
चमक- चमक कर
मेरे जैसे ही तो दिखते हैं
आँखों में चमकते जुगनूं
हौसलों,उमंगों से रोशन
जब भी हो सामने
कोई चुनौती
पार करनी हो
कोई विषम अनुभूति
या निराशा का
चरम बिंदु
'उत्तिष्ठत जाग्रत'
मंत्र स्थापित
है हृदय में मेरे
बनकर मोती।
हो कितना भी
धुँध ओ कोहरा
देदीप्यमान
यही मोती देता
नवल प्रेरणा
और ज्योति
चमकता तो है
आईना भी
और तस्वीर भी
समझाती
साहिबां!
मेरा रुख बदल दो
फिर कुछ
नहीं है अधूरा
दृष्टिकोण सही तो
सब है पूरा
सनातन सत्य
यही सोच
सही दिशा दिखा
ऊपर उठाती
नेक कर्मो की
ओर बढ़ाती।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

देवा: एक्शन ही नहीं एक्शन का ओव्हर फ्लो

वेबसमीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

पाँ जब दर्शक किसी फिल्म के ट्रेलर को देखकर उस फिल्म को लेकर जबर्दस्त उत्साह से भरकर फिल्म देखने आते हैं तो एक्टर

-एक्ट्रेस, डायरेक्टर -राईटर और फिल्म की तमाम यूनिट की दिल की धड़कनें बढ़ जाती है और ऐसा ही रोशन एड्र्यूज़ की फिल्म - देवा के साथ भी है । शाहिद कपूर और पूजा हेगड़े की फिल्म देवा का दर्शकों को बेसब्री से इन्तज़ार था । फिल्म का खुद शाहिद कपूर ने भी जमकर प्रमोशन किया था । मूवी के ट्रेलर जिसे दर्शकों ने बेहद पसन्द किया था वह ट्रेलर भी एक्शन पैक्ड या उससे भी आगे उसमें एक्शन का ओवरफ्लो था । दर्शकों को कहीं ना कहीं शाहिद कपूर की फिल्म देवा में उनका कबीर सिंह वाला लुक थोड़ा बहुत देखने को मिल सकता है, यह उम्मीद भी थी । इस फिल्म के माध्यम से शाहिद कपूर बड़े परदे पर काफी लम्बे समय बाद वापसी करने जा रहे है । रोशन एंड्र्यूज ने इस फिल्म का निर्देशन किया है। जोकि मलयालम सिनेमा के जाने माने निर्देशक हैं। निर्देशक के रुप में फिल्म की छोटी-छोटी बारीकियों पथ ध्यान देने वाले रोशन ने इस फिल्म में भी छोटी-छोटी डिटेल्स को बहुत अच्छी तरह से फिल्माया है ।

फिल्म में शाहिद कपूर पुलिस ऑफिसर की भूमिका में हैं। शाहिद कपूर के प्रशंसकों ने हमेशा उन्हें लीक से हटकर भूमिका और भव्य चरित्रों में ही पसन्दटटं किया है। लेकिन इस फिल्म में उनका कबीर सिंह का लुक देखने को मिलने वाला है। तो वहीं फिल्म में पूजा हेगड़े पत्रकार की भूमिका में शाहिद कपूर के अपोजिट हैं ।शाहिद कपूर ने देव के किरदार में जान डाल दी है। शाहिद ने अकेले अपने बूते पर पूरी फिल्म सम्भाली है। उन्होंने रॉ इंटेंसिटी, भावनात्मक उतार चढ़ाव के साथ एक्शन और अपने चरित्र को बेहतरीन तरीके से देव के अन्दर ढालने की कोशिश की है।अपने पिता के अपराधी अतीत का बोझ ढोना और एक 'एंग्री यंग मैन' के रूप में खड़ा होना शाहिद ने बखूबी निभाया है ।

मलयालम सिनेमा की प्रसिद्धि के आधार पर पहली हिन्दी फिल्म निर्देशित करने आए निर्देशक रोशन एंड्रूज हिन्दी में अपनी डेब्यू फिल्म 'देवा' के प्रचार में वह बार बार कहते रहे हैं कि ' देवा ' में बारह साल पहले आई उनकी ही फिल्म ' मुंबई पुलिस ' की रीमेक नहीं है। वजह साफ है हिन्दी फिल्म दर्शकों ने रीमेक फिल्मों को भाव देना बंद कर दिया है। 'दृश्यम' जैसी इक्का दुक्का फ्रेंचाइजी की रीमेक भले चल रही हों, लेकिन ओरिजनल 'दृश्यम' के हीरो मोहन लाल इसकी भी तीसरी फिल्म अभी तक शुरू नहीं कर पाए हैं। फिल्म 'देवा' में फिल्म के हीरो का नाम देव है। एक दुर्घटना के बाद अपने डॉक्टर से वह मिलने जाता है तो डॉक्टर उसे समझाता है कि पहले वह देव ए था और अब देव बी है। फिल्म का नाम 'देवा' शायद यहीं से निकला है। उधर मलयालम फिल्म 'मुंबई पुलिस' में फिल्म

का नाम निकला था फिल्म के तीन मुख्य किरदारों के कोच्चि पहुंचने से पहले मुंबई की क्यू वन ब्रांच में काम करने का मौका मिलने से।

फिल्म की सबसे कमजोर कड़ी इसका फिल्मांकन है। मुम्बई को अपनी कर्मस्थली मानने वाली एक कहानी में मुम्बई जैसा दिखना चाहिए, वैसा है नहीं। फिल्मों की कहानियों का वातावरण उनको विश्वसनीय बनाने में बड़ी भूमिका निभाता रहा है। खासतौर से तब जब फिल्म के हीरो की बोली और चाल ढाल किसी खास शहर की नुमाइंदगी करती हो। यहां बॉस्को लेस्ली मार्टिस मुंबई की आत्मा ही नहीं समझ पाए हैं। अपनी फिल्म 'मुंबई पुलिस' में जिस तरह से रोशन ने मुंबई की फास्ट लाइफ का जिक्र किया है, वैसी ही मुंबई उन्होंने यहाँ नहीं रची ।

दिक्कत क्या है, ये फिल्म की तकनीकी टीम ही समझा सकती है। सुभाष साहू की साउण्ड डिजाइन पर उनका जोर नहीं दिखता है। कब कहाँ कितनी आवाजें, शोर में तब्दील नहीं होंगी, इसका पैमाना हिन्दी सिनेमा में लगता है बच ही नहीं है ।हां, फिल्म का कास्टिंग डिपार्टमेंट दमदार है। सहायक कलाकारों की भर्ती करने में मुकेश छाबड़ा फिर नम्बर वन रहे।

इस फिल्म में पटकथा को लेकर एक अजीब प्रयोग किया गया है । फिल्म का रन टाइम 156-53 मिनट है और देवा पर काम करने वाले किसी भी अभिनेता को पूरी पटकथा नहीं मिली है जिसमें क्लाइमेक्स सीन भी शामिल हो। शाहिद कपूर, पूजा, कुबरा, पावेल और अन्य लोगों के साथ साझा की गई पटकथा में वह सीन नहीं लिखे गए थे। निर्देशक कलाकारों के बीच वही उत्सुकता पैदा करना चाहते थे। जो दर्शकों को फिल्म रिलीज होने पर महसूस होगी। एक ओर बात फिल्म को भारत में यू/ए 16+ रेटिंग मिली है वह भी तब जब इसमें से छः सेकेण्ड की अवधि का एक घनीभूत चुम्बन दृष्य (लिपलॉक किसिंग सीन) हटा दिया गया । इसके अलावा गाली-गलौज पर भी सेंसर बोर्ड की कैंची चली है। फिल्म की अवधि 156 मिनट और 59 सेकेंड है।

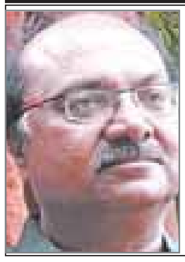

जयंती विशेष

डॉ. महेन्द्र अग्रवाल

लेखक साहित्यकार हैं।

महाकवि निराला और उनकी ग़ज़लें

बसंत पंचमी के साथ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (1896-1961 ई0) का स्मरण होना स्वाभाविक है। कारण बसंत पंचमी के साथ निराला के जन्म दिन की अवधारणा है। हिंदी साहित्य में निराला अपने कृतित्व के साथ उदार व्यक्तित्व के लिए भी जाने जाते हैं।ऐसे कई किस्से हैं कि निराला घर से कपड़े पहने निकले और लौटते में किसी दुखियारे या गरीब भिखारी को देखा तो उतारकर उसे दे दिये।पहलवानी का शौक रहा तो उघाड़े बदन भी उन्हें संकोच नहीं होता था।

निराला को निराला बनाने में उनकी पत्नी मनोहरा देवी की बड़ी भूमिका रही किन्तु कालिदास और तुलसीदास के प्रसंग में विद्योत्तमा और रत्नावली की बहुत चर्चा हुई किन्तु निराला के प्रसंग में मनोहरा देवी की उतनी चर्चा न हो सकी।वह न होतीं तो निराला शायद हिन्दी की जगह बंगला के कवि होते। निराला जब ढाई साल के थे उनकी मां का स्वर्गवास हो गया था फलस्वरूप माँ के प्यार के अभाव में उनके जीवन में शुष्कता आने लगी। बाद में उनके अक्खड़ और फक्कड़ स्वाभाव पर इसका गहरा प्रभाव हुआ। उचित लालन पालन के अभाव और पिता के हाथों पिटाई के शिकार निराला उच्छृंखल व विद्रोही बन गये।अव्यस्क निराला का विवाह मनोहरादेवी के साथ हुआ पर गोना सोलह वर्ष की आयु में संभव हुआ। दोनों के विचारों में अंतर था फिर भी मनोहरा देवी भरसक साथ निभाने का प्रयत्न करती थीं। वह शाकाहारी थीं तो निराला मांसाहारी। उनके मधुर कंठ और रामचरित मानस पाठ से ही निराला हिन्दी की ओर आकर्षित हुए।

प्लेग की बीमारी के हाहाकार में चार वर्ष के पुत्र और एक वर्ष की पुत्री सरोज को असहाय छोड़कर पत्नी स्वर्ग सिधार गई तो निराला ने उन्हें ननिहाल में छोड़ दिया। घर लौटे तो शीघ्र ही बड़े भाई और भाभी का निधन हो गया। बाद में घर में दो मौतें और देखीं तो वेदना हृदय में घर कर गई।घर परिवार की स्मृतियां दुख देने लगीं।शनैः शनैः परिस्थितियां उन्हें अपने भावों को वयक्त करने के लिए साहित्य सृजन की ओर मोड़ने लगीं।

प्रिय पुत्री सरोज की मृत्यु पर लिखी गई कविता सरोज स्मृति हिंदी साहित्य की श्रेष्ठ शोक गीतिका है।मैं पिता निरर्थक था कुछ भी तेरे हित कर न सका पढते हुए छाती फटने लगती है।राम की शक्ति पूजा हिंदी साहित्य के विधार्थियों को पढ़ाई जाती है।निराला की महत्वपूर्ण कृतियों में अनामिका परिमल गीतिका अर्चना तुलसीदास आराधना बेला नये पत्ते कुकुरमुत्ता काव्य तथा अप्सरा अलका प्रभावती निरुपमा काले कारनामे उपन्यास चतुरी चमार देवी आदि उनकी श्रेष्ठ कहानियां हैं जिनमें व्यंग्य प्रमुखता से उभरा है।

निराला ने अनुवाद भी किये और विभिन्न विधाओं में सृजन करते हुए सभी में अपनी छाप छोड़ी। यहां तक कि उर्दू से आयातित विधा गजल में भी उन्होंने हाथ आजमाये।उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ से बृजभाषा का निष्कासन तथा खड़ी बोली का आन्दोलन और उसके अर्न्तविरोध छायावादी युग के कवियों तक को प्रभावित करते रहे। इस युग तक उर्दू भाषा व दैनिक जीवन के माध्यम से फ़ारसी अरबी के शब्द इतने प्रचलित हो गये थे कि रचनाकार चाहकर भी उनके प्रयोग से बच न सके।डॉ. रामविलास शर्मा ने निराला में लिखा है महादेव बाबू से उन्होंने उर्दू की काफी गजलें सुनी थीं। तभी से उन्हें गजलें गाने का भी शौक हुआ। यहां गाने का आशय लिखने से है।सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला इस दौर चर्चित ग़ज़लकार हैं और उनकी अधिकांश ग़ज़लें बेला काव्य संग्रह में संकलित हैं।उदाहरण स्वरूप-

बदली जो उनकी आँखें इरादा बदल गया।
गुल जैसे चमचमाया कि बुलबुल मसल गया।।
यह टहनी से हवा की छेड़छाड़ थी मगर
खिलकर सुगंध से किसी का दिल बहल गया।
ख़ामोश फ़तह पाने को रोका नहीं रुका
मुश्किल मुक़ाम ज़िंदग़ी का जब सहल गया।
मैंने कला की पाटी ली है शेर के लिए
दुनिया के गोलंदाज़ों को देखा दहल गया।

इसी तरह एक और गजल के कुछ शेर -

किनारा वह हमसे किये जा रहे हैं
दिखाने को दर्शन दिये जा रहे हैं
जुड़े थे सुहागिन के मोती के दाने
वही सूत तोड़े लिये जा रहे हैं
ज़माने की रफ़्तार में कैसे तूफ़ाँ
मरे जा रहे हैं जिये जा रहे हैं

निराला ने ग़ज़लें अवश्य लिखीं परन्तु उनके पास उर्दू ग़ज़लों वाला मुहावरा नहीं था। डॉ. गणेश खरे के अनुसार 'निराला ने जो ग़ज़लगीत लिखे हैं भाषा की दृष्टि से उनके तीन रूप हमें दिखाई देते हैं प्रथम प्रकार के ग़ज़ल गीतों में निराला ने उर्दू छंदों को उर्दू भाषा के ढांचे में ढालने का प्रयास किया है परन्तु उर्दू भाषा पर अबाधित अधिकार न होने के कारण उन्हें इस प्रकार के गीतों में सफलता प्राप्त न हो सकी। द्वितीय प्रकार की वे ग़ज़लें हैं जिनमें निराला ने संस्कृत निष्ठ सामाजिक पदावली का प्रयोग किया है। संस्कृत या हिन्दी भाषा ग़ज़ल की प्रकृति और रूप विन्यास से भिन्न है अतएव निराला इन प्रयोगों में भी असफल रहे हैं। तृतीय प्रकार की उनकी वे ग़ज़लें हैं जिनमें उन्होंने हिन्दी उर्दू भाषाओं की पदावली का प्रयोग किया है.।किन्तु यत्र तत्र संस्कृत के क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग भी वे कर गए हैं। इस प्रकार की ग़ज़लों में निराला को आंशिक सफलता प्राप्त हुई है'। निराला जी की ग़ज़लें इस विचार की पुष्टि करती हैं यथा-

संकोच को विस्तार दिये जा रहा हूँ मैं
छन्दों को विनिस्तार दिये जा रहा हूँ मैं
दुनिया के शायरों की किताबों में जो आयी
उस युवती को सिंगार दिये जा रहा हूँ मैं
युग को किया सुरूप दुनिया की आंखों में
गोया मदन को प्यार दिये जा रहा हूँ मैं

निराला ग़ज़ल और नई ग़ज़ल के बीच की कड़ी हैं जिन्होंने नई ग़ज़ल के लिये भूमि तैयार करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। कथ्य की व्यापकता उनकी ग़ज़लों की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। देश की पराधीन स्थिति और सर्वहारा वर्ग के शोषण से क्षुब्ध उनकी मनस्थिति ने पहली बार ग़ज़लों को यथार्थवादी स्वर दिया है। कवि के विचार जनता की आंकाक्षाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस दृष्टि से निराला सच्चे जन गजलकार थे। देखिए-

भेद कुछ खुल जाये वह सूरत हमारे दिल में है
देश को मिल जाये जो पूंजी तुम्हारे दिल में है ।
खुला भेद विजयी कहाए हुए जो
लहू दूसरों का पिये जा रहे हैं ।

निराला ने हिन्दी ग़ज़ल को नई दिशायें दीं।निराला ने पहली बार उर्दू बहरों से काम लिया और खड़ी बोली में उर्दू बहरों का प्रचार किया है। उनकी ग़ज़लों में प्रौढ़ता के लक्षण हैं और परवर्ती कवियों को मार्ग दर्शित करने की क्षमता भी। अतः उनकी ग़ज़लें ऐतिहासिक महत्व रखती हैं। निराला से पहले यह तेवर यह भंगिमा नज़र नहीं आती फिर भी यह ग़ज़लें श्रेष्ठतम निराला काव्य का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं।हिन्दी साहित्य की विडम्बना है कि जैसे दुष्यंत कुमार को सिर्फ गजलकार के रूप में याद किया जाता है उसी तरह निराला को भी केवल कवि के रूप में स्मरण किया जाता है।निराला वस्तुतः निराले साहित्यकार थे जिन्हें एक गजलकार कहानीकार उपन्यासकार के रूप में भी स्मरण किया जाना चाहिये।

कविता

बसंत के गीत

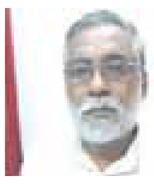

कमलेश कुमार दीवान

मुझसे बसंत के गीत नहीं
गाए जाते ओ मन।
कुछ देर डालियों पर ठहरो
पाती पर नाम लिखूंगा
अजनबी हवाओं सखा साथियों के
तन मन बैठूंगा
धूं-धूं जल रहे पहाड़ और
भाए भरमाएं मन
मुझसे इस अंत के गीत नहीं
गाए जाते ओ वन ।
मुझसे बसंत के गीत नहीं
गाए जाते ओ मन।
सब मौन रहें कैसे बोलें
ये मूक सरूप हरा सा है
इसने उसने सबने देखा
वह रूप अनूप धरा का है
खिलते हैं फूल बिखरी सुगंध
वन मन का कोप जरा सा है
यह अंत भी है,प्रारंभ भी है
मनमोहक सूप यामिनी का
क्यों बरस रहा आकाश आज़
सौंदर्य सेतु ,अप्सरा का है
अब तो इस पंथ के मीत नहीं
भाए जाए ओ मन
मुझसे बसंत के गीत नहीं
गाएं जाते ओ वन।

क्या मधुमास है

सीमा देवेन्द्र

एक टुकड़ा धूप का कह रहा के ये मधुमास है
सांझ भी ढलती कहे आ गया मधुमास है।

बदले बदले रंग है आंखो में उतरा सा मधु
फिर ये वसुधा भी यही कह रही के ये मधुमास है।

जानती है तितलियां भी जो रंग पंखो को मिले
छेड़कर ये भ्रमर दल कहते हैं ये मधुमास है।

रंग फूलों पे है यौवन कलियां यूं गदराई है
मधु मधु करता रहा मधुबन के अब मधुमास है।

गा रही है क्यूं ये पगली विरह गीत कोयल यहां
क्यूं वेदना के स्वर हैं ये सीमा में क्या मधुमास है?

सखि! बसंत आया

रामेश्वरम तिवारी

फिर कोयलिया कूकी,
फिर अँबुआ है बौराया,
सखि! बसंत आया!

विजन में टेसू दहक उठे,
चमन में फूल महक उठे,
देशम् को महकाया!

मन की बात भौंहन कही,
राग-रंग की सरिता बही,
अँगन अनंग समाया!
मीठी लगने लगी छुअन,
सच हुआ सतरंगी सपन,
प्रियम् संदेश लाया!

बसंत पंचमी का पर्व

संजय एम तराणेकर

आया है बसंत पंचमी का पर्व,
करों खुशियों का संचार गर्व।
इस दिन का है विशेष महत्व,
भारतीय संस्कृति का है सत्व।
करो देवी सरस्वती आराधना,
ज्ञान, संगीत व कला साधना।

आया है बसंत पंचमी का पर्व,
करों खुशियों का संचार गर्व।
स्वयं को उमंग, ऊर्जा से भरों,
अहसांस सबको देते हुए चलो।
आज बदलते है प्रकृति के रंग,
खुशी और समृद्धि कर दे दंग।

आया है बसंत पंचमी का पर्व,
करों खुशियों का संचार गर्व।
छाई हरियाली पीला है बसंत,
सारी सृष्टि खिली हुई अनंत।
समाज, राष्ट्र, विश्व की नमन,
करें महिमा यशगान मनमोहन।

बसंत पंचमी विशेष

अमित राव पवार

लेखक साहितॅयकार हैं।

संघर्ष को निखारता बंसत

हिंदू धर्म व प्राचीन भारतीय सनातन परंपरा में हर दिन नित्यनए उत्सव, पर्वो, त्यौहारों, तिथियों का आगमन होता ही रहता है। यहाँ पर्वो के साथ माह का भी अपना एक महत्व होने के साथ छः ऋतुओं को अंग्रेजी कैलेंडर के बारह महीनेनुसार दो-दो माह में विभक्त किया गया है जो सूर्य व चंद्रमा की गति पर आधारित जबकि अंग्रेजी कैलेंडर दिन के आधार पर आधरित है। हिन्दू माह चैत्र (मार्च)से प्रारंभ होकर फाल्गुन (फरवरी) पर समाप्त होकर इसी दौरान ऋतुओं के राजा बसंत का आगमन होता है।यह (फरवरी-मार्च) हमको संदेश देता है कि नए को स्वीकार करने के साथ पुराने को विदा करें जैसे पेड़-पौधे की पुरानी पत्तियों का जाना व नए का आना इस बात का सूचक है कि प्रकृति अपना कर्म कर रही है। मनुष्य ही है,जो आधुनिकता के दौर में प्रकृति से छेड़छाड़ कर स्वयं हानि की ओर बढ़ रहा जिसका परिणम समय-समय पर भुगत भी रहा है। बसंत ऋतु का माह हमको शिक्षा दे रहा है कि जीवन के संघर्ष कभी व्यर्थ नहीं जाते जिस तरह वर्षभर वायु,जल,अग्नि से पेड़-पौधे संघर्ष करते हैं फिर भी बसंत आने पर ये पुनः नए प्रकाश की तरह खिल जाते हैं। 'संघर्ष को निखारता बसंतऋतु' का आगमन मन में नये उमंग व उत्साह का संचार करता क्योंकि मनुष्य के जीवन में मौसम (ऋतुओ) का भी गहरा प्रभाव पड़ता है ये ऋतुए ही तो है जो एक दूसरे के मन का मैल दूर कर आपस में प्रेम को बढ़ावा देती है।

पतझड़ के जैसा जब मनुष्य संघर्ष करता है तब बसंत के समान विजय भी पाता है। श्री राम चौदह सालों के अपने संघर्ष के बाद जब अयोध्या लौटे तो वे 'पुरुषोत्तम भगवान श्री राम'कहलाए,रानी अहिल्याबाई होलकर ने संघर्ष करते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन समाज व राष्ट्र के हित मे व्यतीत किया तब वे 'देवी' अहिल्याबाई कहलाई।ऐसे अनेकों उदा.हमारे रोजमर्रा के जीवन में आसपास दिखाई देते ही होंगे फिर चाहे कितना ही बड़ा व्यक्तित्व क्यों न हो पतझड़ उसने सहा ही होगा ततपश्चात ही बसंत की विजय का आनंद प्राप्त किया होगा। युगों-युगों से भारत ही है-जो अपनी प्राचीन-सभ्यता,पर्व-उत्सव को संजोए हुए खड़ा है। कितने ही मुगल आक्रमण हुए,अंग्रेजी हुकूमत आई,पर देश ने हर युग में गाया-'मेरा रंग दे बसंती चोला' बस यही तो बंसत है।और यहीं भारत का बसंत है ओर यही बसंत भारतराष्ट्र में संभव है। भगतसिंह ने भी अपने साथियों के साथ लवपुरी (लाहौर) में हँसते-हँसते बसंत का चोला ओढ़ा। हमारे पूर्वजों ने अपने प्राणों की आहुति देकर हमें जो दिया यह भी एक प्रकार का बसंत ही तो है। सारे विश्व में बसंत आता है।परंतु इस भारतीय सभ्यता और संस्कृति का बसंत कुछ विशेष है।भारत में केवल फाल्गुन बसंत में आता है,और फाल्गुन केवल भारत में ही आता है।गोकुल,बरसाने,मथुरा,काशी में फागुन का फाग,अयोध्या में उड़ता गुलाल,श्री कृष्ण राधा की फागोत्सव यह भारत देश में ही संभव है।

शास्त्रोंनुसार माघ माह के शुक्लपक्ष की पंचमी तिथि को बसंत पंचमी मनाई जाती इस वर्ष यह दिन 02 फरवरी को आ रहा है।बसंत पंचमी ऋतु के दिन ही तो हम कुबुद्धि से सदबुद्धि की प्रार्थना माँ सरस्वती से कर सकते हैं जिनका प्रकटत्सव इसी दिन हुआ तथा माँ सरस्वती जी इस संसार को नकारात्मकता से सकारात्मक का अपनी संतानों को प्रकाश दे रही है। यह दिन ज्ञान,बुद्धि व विद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती जी को समर्पित होने के साथ ही विशेष पूजन का दिन होता है जिसे हम माँ सरस्वती जन्मोत्सव के रूप में मनाते है।साथ ही भगवान श्री गणेश, माँलक्ष्मी, नवग्रहों, पुस्तक, लेखनी,वाद्य यंत्रों की पूजा का भी इस दिन विधि-विधान से करने को उत्तम माना गया है जिससे वर्षभर हमारे कार्य क्षेत्र मे यश की प्राप्ति बनी रहती है। ब्रह्मा वैवर्त पुराण के अनुसार बसंत पंचमी के दिन मंत्र-दीक्षा,नए रिश्ते,नई कला एवं नए कार्य को प्रारंभ करने के लिए शुभ माना गया है। हिन्दू धर्म के मुताबिक इस दिन दोष रहित क्षेष्ठ योग तथा अबूझ मुहूर्त रहता है अतः इस दिन का महत्व और बढ़ जाता है। इसी दिन भगवान शिव व माता पार्वती का तिलक उत्सव व उनके विवाह की रस्मे प्रारंभ हुई थी।

धार्मिक मान्यताओं के आधार पर भगवान श्री कृष्ण ने पीतांबरा धारण कर माँ सरस्वती जी का पूजन किया था।पीले रंग का संबध गुरु ग्रह से होता है,जो ज्ञान,धन और शुद्धता के कारण माने जाते है बसंत ऋतु का मौसम सभी मौसम में श्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि इस समय वातावरण अनुकूल रहता है इस ऋतु में पृथ्वी पर चारो ओर हरियाली दिखाई देती है,विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां भी अपने यौवन रूप में रहती है ऐसा लगता है मानो प्रकृति रूपी स्त्री ने सोलह श्रृंगार किए हो।प्रकृति बहुत ही सुंदर रूप में दिखाई देती है।यह प्रकृति ही तो है जो बसंत के रूप में चोला ओढ़कर हमें ग्रीष्मऋतु में शीतऋतु जैसा सुकून देती,वर्षाकाल के दौरान आकाश की बूंदों को अपनी ओर आकर्षित कर पृथ्वी की प्यास बुझाने का प्रयास करती,यही तो बसंत है,जब एक दूसरे के स्नेह प्रेम से यह संसार गतिमान होकर चल रहा है और माँ सरस्वती हम सबको सुविचार की ओर ले जा रही है।

बसंत ऋतु का महत्व न केवल प्राकृतिक सौंदर्य के लिए है बल्कि यह ऋतु अनेक पर्व उत्सव त्योहारों का भी समय है यह बसंत मनुष्य को उमंग व उत्साह के साथ प्रकृति के आनंद लेन का अवसर देती तथा उसके सुंदरता का अनुभव करवाती है व प्रकृति से जुड़ने का आव्हान करती है।जैसे मनुष्य विजय के बाद अपने आप में ऊर्जा व प्रसन्नता पाता,ठीक इसी प्रकार बसंतऋतु अपने साथ नई जीवनशक्ति व सौंदर्य लाती,बसंत ऋतु प्रकृति के आंनद की ऋतु है।

कविता

कभी नयन के नीर में देखो

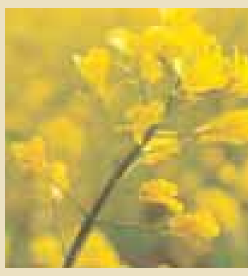

संध्या राजपुरोहित

कभी पवन की पीर में
सांसों की खुशबू में महके
कभी तानो के तीर में
मस्त महीना प्रेम का देखो
नित नए रूप बदलता है
देखो रंग अनंत बसंत के
पतझड़ कहां ठहरता है
यह मन की पीर है
कैसे कहूं भीतर मधुमास सुलगता है ।

उपवन उपवन बाग बगीचे
हर फूल खुशबू से महक रहे
कोयल कुके आमों पर
भंवरे रस फूल का लूट रहे
पर्वत की छाती से देखो
नित नूतन झरने फूट रहे
हर डाल डाल यूं गहरी है
हर पत्ते पत्ते छूट रहे
तन मस्त मयूर नाचे है
हिरण कस्तूरी तरसता है
यह मन की पीर है
कैसे कहूं भीतर मधुमास सुलगता है।

कोई ईश्वर माने या अल्हा माने
रब मन की राम प्रभु
कोई मंदिर जाए गुरुद्वारा
कोई करे अजान अरदास प्रभु
करते सभी आराधना देखो
हर चौखट दीपक जलता है
पाप पुण्य के खेल में देखो
एक जन दूजे को छलता है
धर्म कर्म की आड़ में क्यों
ममता का रूप झुलसता है
यह मन की पीर है कैसे कहूं भीतर मधुमास
सुलगता है ।

कहते हो तुम राम यहां
गांधी गौतम भी रहते हैं
देश में फिर आजाद के क्यों
अत्याचारों को सहते हैं
हर शख्स यहां हर वक्त हमें
एक नए पैरहन में दिखता है
ज्वाला भड़का दे एक फूंक में
वह आग दबा के रखता है
भीख मांगता सड़कों पर
बचपन ये कैसा सिसकता है
यह मन की पीर है
कैसे कहूं भीतर मधुमास सुलगता है।

क्यों भाई भाई का दुश्मन है
मन में कैसी ये उलझन है
ताने-बाने में बुने हुए हम
उलझन है कि सुलझन है
धूप में पिता झुलसता है
चूल्हे पर माता तापती है
तब कहीं जाकर बड़े जतन से
फिर औलादें पलती है
हर ममता अंगड़ाई लेती है
जब कोख में बच्चा मरता है
यह मन की पीर है कैसे कहूँ
भीतर मधुमास सुलगता है ।

महलों की ऊंचाई से
सम्मान को नापा जाता है
बड़े गुणों से नहीं बनते
कपड़ों से पूजा जाता है
मुखौटो के इस भीड़ में देखो
चेहरा रोज बदलता है
आडंबरों की ओट में देखो
सच तिल तिल कर मरता है
घर बड़े हुए कम लोग हुए
सुना हर घर का आंगन है
आठों पहर बरसाती आंखे
सूखा मन का सावन है
सबके किस्से सुने सुनाए
गरीब का सिक्का उछलता है
यह मन की पीर है
कैसे कहूँ भीतर मधुमास सुलगता है ।

युग सहस्त्र जिए युग सहस्त्र जिए
अब सहस्त्र से आगे जाना है
इतिहास बनाना है तो फिर
इतिहास से आगे आना है
हर गली मोहल्ला उत्सव हो
हर घर आनंद के धाम बने
स्वर सौरभ सुषमा से मंडित
अपना हिंदुस्तान बने
प्रीत बने अब रीत यहां
ना कोई बैर की बात बने
यदि जन्म मिले फिर मानव का तो
हम एक अच्छे इंसान बने
ना ऊंच-नीच का भेद रहे
ना छूत अछूत दीवारें हो
एक दूजे के हो लेकिन
हम एक दूजे के सहारे हो
मन निर्मल गंगा की धारा
तन पवन एक किनारा हो
हो पुनीत तपस्या प्रेम की यूं
सुरभित आकाश से सारा हो
प्रतिबंध अनेक है फिर भी देखो
छिपता सूर्य निकलता है
मन में रहे ना कोई पीड़ा
हर दिन मधुमास फिर लगता है।

स्मार्ट सिटी सी.ई.ओ. अंजू अरूण ने पद संभाला

भोपाल। भोपाल स्मार्ट सिटी डेवलपमेंट कॉर्पोरेषन लिमिटेड में नवनियुक्त सीईओ अंजू अरूण कुमार ने अपना पद्भार ग्रहण कर लिया। 2017 बैच की आईएएस अधिकारी अंजू अरूण कुमार अपर कलेक्टर ग्वालियर के पद पर पदस्थ थी। पदभार ग्रहण करने के साथ ही उन्?होंने स्मार्ट सिटी कंपनी द्वारा किये जा रहे कार्यो की समीक्षा की और आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

भारतीय तटरक्षक बल के जवानों का साहस, त्याग और समर्पण है वंदनीय

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारतीय तटरक्षक दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि सामुदायिक तटों और महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्रों को सुरक्षा प्रदान कर भारतीय तट रक्षक देश की समृद्धि में अद्वितीय योगदान दे रहे हैं। वयम् रक्षाम के ध्येय वाक्य को आत्मसात कर देश की तटीय सीमाओं की रक्षा के लिए समर्पित भारतीय तटरक्षक बल (इंडिया कोस्ट गार्ड) के जवानों का साहस, त्याग और समर्पण वंदनीय है।

व्हाइट टाइगर ब्रीडिंग सेंटर गोविंदगढ़ को मिली सीजेडए की मंजूरी

- **जैव विविधता संरक्षण एवं पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा : उप मुख्यमंत्री**

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने गोविंदगढ़, रीवा में प्रस्तावित व्हाइट टाइगर ब्रीडिंग सेंटर को मिली मंजूरी पर प्रदेशवासियों को बधाई दी है। उन्होंने केंद्र सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि यह परियोजना प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के विजन के प्रति राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। व्हाइट टाइगर ब्रीडिंग सेंटर की स्थापना न केवल बाघों की संख्या को बढ़ाने में सहायक होगी बल्कि पर्यटन को भी प्रोत्साहन देगी। यह पहल बाघ संरक्षण और प्रकृति के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ करेगी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्य प्रदेश सरकार जैव विविधता के संरक्षण, वन्यजीव सुरक्षा और पर्यटन के विकास के प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। गोविंदगढ़, रीवा में प्रस्तावित व्हाइट टाइगर ब्रीडिंग सेंटर को मिली मंजूरी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है कि मध्य प्रदेश वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में आदर्श राज्य बने।

स्कूल में शिक्षकों व जिपं उपाध्यक्ष ने किया पौधारोपण

बैतूल। आगामी पीढ़ी की सुरक्षा के साथ-साथ पर्यावरण को हरियाली युक्त बनाने के साथ साथ स्कूली बच्चों को पर्यावरणीय महत्व की आवश्यकता को समझाने के उद्देश्य को लेकर शनिवार को ढोडवाडा स्कूल परिसर में शिक्षकों के साथ

जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, जनपद सदस्य अल्केश वाघमारे, समाजसेवी पर्वत धोटे व भाजपा नेता मुन्ना मानकर का जन्मदिन व शिक्षक की बेटी संचिता डढोरे के जन्मदिन के अवसर पर परिसर में कइयों प्रजाति के पौधों का रोपण किया गया। जिससे बच्चे पर्यावरण के महत्व को रेखांकित कर पौधों की सुरक्षा व उनके महत्व को समझ सके। इस अवसर पर संस्था की प्राचार्य श्रीमती मीना डंडारे व शिक्षक मदनलाल डढोरे ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन करने से बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता आती है। इस अवसर पर पंकज धोटे, प्राचार्य संजय गुहे, दिनेश मानकर, कैलाश पवार, पुष्पक धोटे, ऋषि देशमुख, प्रीतिबाला माकोड़े, हेमलता चौधरी, योगेंद्र मेहरा, डॉ. कलावती हरोड़े, महेंद्र पवार, राजेंद्र बेले, शारदा माथनकर सहित शिक्षकगण एवं ग्रामीण उपस्थित थे।

राजमाता फुलवा देवी कांगे आज आएंगी बैतूल

सोनारखापा में ऐतिहासिक आयोजन की तैयारी पूरी

बैतूल। भूमकाल विद्रोह के जननायक कंगला मांझी की धर्मपत्नी और मांझी सरकार की सुप्रीमो, राष्ट्रीय अध्यक्ष राजमाता श्रीमती फुलवा देवी कांगे आज 2 फरवरी को बैतूल जिले के सोनारखापा पहुंचेंगी। इस ऐतिहासिक सम्मेलन की तैयारी बीते एक माह से की जा रही है। मांझी अंतर्राष्ट्रीय समाजवाद आदिवासी किसान सैनिक संस्था और अखिल भारतीय माता दंतेवाड़ीन समाज समिति के भारत प्रतिनिधि श्रवण परते के नेतृत्व में गांव-गांव में बैठकें आयोजित कर कार्यक्रम की रूपरेखा तय की गई है। श्रवण परते ने बताया कि यह सम्मेलन आदिवासी समाज के गौरव और सैनिकों की एकता का प्रतीक होगा। इसमें देशभर के आदिवासी प्रतिनिधि, सैनिक संगठन और समाजसेवी शामिल होंगे। इस अवसर पर राजमाता फुलवा देवी कांगे अपने प्रतिनिधिमंडल के साथ उपस्थित रहेंगी और आदिवासी किसान सैनिकों को संबोधित करेंगी। राजमाता फुलवा देवी कांगे के आगमन को लेकर चाक चौबंद व्यवस्था कर ली गई है। सम्मेलन में विशेष रूप से सैनिक संगठन और सामाजिक मुद्दों पर चर्चा होगी। भारत प्रतिनिधि श्रवण परते ने बताया आदिवासी समाज की पहचान, संस्कृति और इतिहास को सहेजने के उद्देश्य से आयोजित इस सम्मेलन में देशभर से आदिवासी समाज के लोग शामिल होंगे। यह सम्मेलन आदिवासी गौरवशाली इतिहास को दोहराएगा, साथ ही भविष्य की दिशा भी तय करेगा। राजमाता फुलवा देवी कांगे के नेतृत्व में यह आयोजन आदिवासी स्वाभिमान और सैनिकों की ऐतिहासिक एकता का प्रतीक बनेगा।

राजधानी में विन्ध्यवासियों ने अपनी अलग पहचान बनाई : राधासिंह

वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान करना बघेलखंड की परम्परा: अजयसिंह

भोपाल। राजधानी भोपाल में बसने वाले विन्ध्य क्षेत्र के निवासियों ने अपनी अलग पहचान बनाई है और ये प्रसन्नता की बात है कि यहाँ पर विन्ध्य की संस्कृति, परम्परा और विरासत को सहेजने का काम किया जा रहा है। पंचायत राज्यमंत्री श्रीमती राधासिंह ने कहा है कि राजनीतिक विचारधाराओं से ऊपर उठकर जनप्रतिनिधियों द्वारा क्षेत्र के विकास के लिये जो सामूहिक प्रयास किये जाते हैं उनके अच्छे परिणाम हमें और हमारी क्षेत्रीय जनता को मिलते हैं। इस मायने में हमारा विन्ध्य क्षेत्र और खासकर सीधी जिला इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है जहाँ सब लोग मिलकर विकास के कामों में रुचि लेते है। श्रीमती सिंह आज यहाँ बघेलखण्ड भवन में विन्ध्य के वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार रख रही थीं7 पूर्व मंत्री और नेता पूर्व प्रतिपक्ष अजयसिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम के संयोजक बघेलखंड भवन के ट्रस्टी सचिव

डा. कमलाकर सिंह थे। पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजयसिंह ने श्रीमती राधासिंह के वक्तव्य का समर्थन करते हुए कहा कि आज यहाँ जितने भी वरिष्ठ नागरिक आये हैं वो सभी अलग अलग विभागों में महत्वपूर्ण पदों पर रहे हैं। सभी के मन में विन्ध्य के विकास की एक ललक नौकरी में रहते हुए तो थी ही लेकिन आज भी है। सभी ने अपनी अपनी सीमा, अधिकार और कार्यक्षेत्र में रहते हुए विन्ध्य के विकास में अपना योगदान दिया है। जिसे हम नकार नहीं सकते। यही कारण है कि आज हम सब मिलकर एक साथ बात कर रहे हैं।

म.प्र. सहकारी कर्मचारी महासंघ बैतूल की नई कार्यकारिणी घोषित

- **बलवीर मालवी संरक्षक, अरुण अड़लक जिलाध्यक्ष, धर्मराज धोटे कार्यकारी अध्यक्ष बने**

बैतूल। म.प्र. सहकारी कर्मचारी महासंघ, जिला बैतूल की नई कार्यकारिणी का गठन विधिवत रूप से कर दिया गया है। निर्वाचन अधिकारी बलवीर मालवी और मीडिया प्रभारी नवीन साहू ने प्रदेश अध्यक्ष कुवर बीएस चौहान एवं प्रदेश संयोजक लखन यादव की अनुशंसा पर इस कार्यकारिणी की घोषणा की। इस बार 31 सदस्यीय जिला कार्यकारिणी के साथ 11 ब्लॉक अध्यक्षों को भी नियुक्त किया गया है, जो अपने-अपने क्षेत्र में संगठन के कार्यों का संचालन करेंगे। कार्यकारिणी में महिलाओं को भी प्रतिनिधित्व दिया गया है। प्रज्ञा सोनी और सोनम रावत को सदस्य बनाया गया है। निर्वाचित कार्यकारिणी में विभिन्न सहकारी संस्थानों से जुड़े सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया है, जिसमें सहकारी समिति, उपभोक्ता भंडार, मार्केटिंग, विपणन, विक्रेता, महिला कर्मचारी, ऑपरेटर और पियून आदि को स्थान दिया गया है।

सर्वोत्तम आचरण बने जिला सहकारी बैंक की पहचान : मंत्री सारंग

भोपाल। सहकारिता मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा है कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सर्वोत्तम आचरण जिला सहकारी बैंक की पहचान बने। उसके अच्छे कार्यों की मार्केटिंग की जाये। हर बैंक के कर्मचारियों की आचरण और व्यवहार की ऑनलाइन ट्रेनिंग करवाई जाये। उन्होंने कहा कि नवाचार और अच्छा काम करने के लिये बैंक के हर स्तर पर प्रतिस्पर्धा हो तथा साल के अंत में उत्कृष्ट कर्मी को सम्मानित भी किया जाये। मंत्री श्री सारंग शनिवार को समन्वय भवन में जिला सहकारी बैंकों के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों की बैठक को संबोधित कर रहे थे।

केंद्रीय बजट समावेशी और प्रगतिशील-उप मुख्यमंत्री

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण को समावेशी और प्रगतिशील केंद्रीय बजट (वर्ष 2025-26) प्रस्तुत करने पर बधाई दी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में यह बजट भारत को आत्मनिर्भर, समृद्ध और विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। बजट में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, आधारभूत संरचना और कर सुधारों में व्यापक कदम उठाए गए हैं, जो सभी वर्गों को लाभान्वित करेंगे।

एमएसएमई के प्रोत्साहन से बढ़ेंगे रोजगार के अवसर: उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि लघु एवं मध्यम उद्योगों (एमएसएमई) के लिए आसान ऋण सुविधा और विशेष कर छूट की व्यवस्था से इस क्षेत्र को प्रोत्साहन मिलेगा।

इससे रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी और राज्य की औद्योगिक क्षमता को मजबूती मिलेगी। पर्यटन और सांस्कृतिक क्षेत्रों के विकास के लिए हेरिटेज स्थलों के संरक्षण और संवर्धन के लिए विशेष वित्तीय सहायता का प्रावधान किया गया है। यह कदम राज्य की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के साथ-साथ पर्यटन उद्योग को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा।

बोन मैरो ट्रांसप्लांट और कोशिका चिकित्सा पर अतिथि व्याख्यान

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में, संस्थान में एक ज्ञानवर्धक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें बाल चिकित्सा हेमेटोलॉजी ऑन्कोलॉजी, बोन मैरो ट्रांसप्लांट और सेलुलर थेरेपी के विशेषज्ञ डॉ. सत्य प्रकाश यादव ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य पेशेवरों, शोधकर्ताओं और छात्रों ने भाग लिया और कोशिका चिकित्सा में हुई प्रगति के बारे में सीखा।

रामदयाल प्रजापति का निधन

भोपाल। वरिष्ठ भाजपा नेता और मध्यप्रदेश माटीकला बोर्ड के अध्यक्ष रामदयाल प्रजापति का शनिवार को निधन हो गया। करीब 70 वर्षीय प्रजापति भोपाल नगर निगम के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शनिवार अपरान्ह करीब ग्यारह बजे उन्होंने अस्पताल में इलाज के दौरान अंतिम सांस ली। वे अपने पीछे पत्नी और दो पुत्र-दो पुत्रियों सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। बताया जाता है कि स्व. प्रजापति सुबह घर के बाथरूम में गिर गए थे। परिजन उन्हें तत्काल जवाहर चौक स्थित निजी अस्पताल ले गए जहां उपचार के दौरान ही उन्हें सायलेंट हार्ट अटैक आया और चिकित्सकों की तमाम कोशिशों के बाद भी उन्हें बचाया नहीं सका। अस्पताल से उनकी पार्थिव देह को शाहजहांनाबाद स्थित उनके निवास ले जाया गया। अंतिम संस्कार शाम छोला विश्राम घाट पर किया गया।

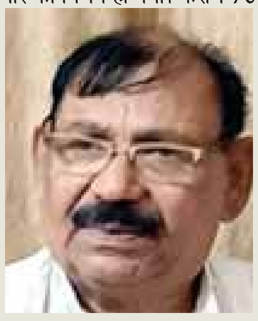

राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया गया

धार। श्री राजेंद्र सूरी शासकीय महाविद्यालय सरदारपुर राजगढ़ में राष्टीय बालिका दिवस महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर एलएस अलावा एवं भारतीय ज्ञान प्रकोष्ठ प्रभारी प्रोफेसर सरिता जैन के मार्गदर्शन में मनाया गया। महाविद्यालय में उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार बालिकाओं के अधिकार प्राचीन एवं वर्तमान परिदृश्य विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्राचार्य प्रो एल एस अलावा ने बालिकाओं को उनके अधिकार की जानकारी दी।

इसके पश्चात मुख्य वक्ता लालिमा विजयवर्गीय ने बालिकाओं के अधिकार प्राचीन एवं वर्तमान परिदृश्य पर व्याख्यान दिया तथा बताया कि ऋग्वेद मे 24 विदुषी महिलाओं का उल्लेख मिलता है वर्तमान में बालिकाओं को उनके अधिकारों के प्रति करने के लिए बालिका दिवस मनाया जाता है प्रो.सरिता जैन ने प्राचीन काल में बालिकाओं के अधिकार और वर्तमान में बालिकाओं के अधिकारों के बारे में जानकारी दी तथा बताया कि संविधान के अनुच्छेद 14,15,16,39, एवं 42 में महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा के लिए कानून बनाने पर चर्चा की गई डॉ राधा अलांसे ने भी अपने विचार व्यक्त किए डॉ डी एस मुजाल्दा ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। आभार प्रदर्शन डॉ मोहित सिंह चौहान ने किया। समाज के उत्थान में बालिकाओं की भूमिका विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें प्रथम स्थान बी.ए प्रथम वर्ष के लक्ष्यद्वीप चौधरी रहे तथा द्वितीय स्थान पर बी एससी द्वितीय वर्ष की छात्रा आयुषी सिंगर रही। कार्यक्रम में विश्विद्यालय स्तर पर आयोजित, कबड्डी प्रतियोगिता टीम में भाग लेकर विजेता रही विद्यार्थी की मधुबाला का सम्मान किया गया। डॉ ममता दास डॉ.राकेश शिंदे डॉ.जितेंद्र भगोरे डॉ राधा अलांसे, स्नेहलता मण्डलोई, विजया दरबार, कमलेश चौहान,, महेन्द्र अलावा, दीपेश डॉगी, महेश उपाध्याय, मीना अलावा, खुशी गेहलोत,योगेश, श्रीमती बिंदु तथा महाविद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पुलिस ग्राउंड में स्वदेशी मेले का शुभारंभ

बैतूल। पुलिस परेड ग्राउंड बैतूल में स्वदेशी मेले का शुभारंभ हो गया है। शुभारंभ अवसर पर विधायक हेमंत खंडेलवाल, नगर पालिका अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। स्वदेशी जागरण मंच के तत्वाधान में मेले का आयोजन किया जा रहा है। इस मेले में बैतूल के पारंपरिक उत्पादों के साथ-साथ अन्य स्वदेशी स्टाल लगाये गये है। शनिवार स्वदेशी मेले के शुभारंभ अवसर पर पत्रकारवार्ता आयोजित हुई, जिसमें मेला समिति के संयोजक धर्मेन्द्र परिहार, जिला समन्वयक राजेश शुक्ला, विभाग संयोजक घनश्याम मदान, सहसंयोजक उज्जवल प्रताप सिंह और सहसंयोजक हेमलता कुंभारे प्रमुख रूप से उपस्थित थी। पत्रकारवार्ता में बताया कि स्वदेशी मेले का आयोजन आगामी 10 दिन तक किया जायेगा। इस मेले में अब तक 80 स्वदेशी स्टॉल लगाए गए है। इन स्टॉलों में लगाए गए प्रोडक्ट स्वदेशी उत्पादों से बने हुए है।

लश्करे ट्रस्ट की अनुकरणीय पहल, जरूरतमंद बच्चों को शिक्षा में देंगे सहयोग

- **माता-पिता के सपनों को साकार कर रहे डॉ. मनीष लश्करे**

बैतूल। शिक्षा के महत्व को समझते हुए और समाज के जरूरतमंद बच्चों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से लश्करे हॉस्पिटल चैरिटेबल एजुकेशन प्रमोशन ट्रस्ट ने 72 गरीब बच्चों को पाठ्य सामग्री वितरित की। ट्रस्ट का उद्देश्य उन बच्चों की सहायता करना है जो आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण आवश्यक अध्ययन सामग्री नहीं खरीद पाते हैं। आज जिले के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. धरमचंद लश्करे के जन्मदिन पर इस ट्रस्ट का शुभारंभ किया गया। ट्रस्ट के इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल, विशिष्ट अतिथि आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे सहित अन्य अतिथियों की उपस्थिति में चयनित बच्चों को पाठ्य सामग्री वितरित की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि लश्करे हॉस्पिटल चैरिटेबल एज्युकेशन प्रमोशन ट्रस्ट के इस कार्य को शब्दों में बयां नहीं कर सकते हैं। आमला विधायक

डॉ. योगेश पंडाग्रे ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि लश्करे परिवार का बैतूल के लिए बड़ा योगदान है। बैतूल जिले के सबसे पहले एम.एस डॉ. धरमचंद लश्करे थे और उन्होंने 1980 में बैतूल में पहला प्राइवेट हास्पिटल खोला था। इसके बाद उनके बेटे डॉ. मनीष लश्करे एम.डी आए और अब उनकी तीसरी पीढ़ी भी चिकित्सा के क्षेत्र में बैतूल में सेवा देने आ रही है। लश्करे परिवार के द्वारा जरूरतमंद बच्चों के लिए किया जा रहा यह कार्य बहुत ही सराहनीय है। इस अवसर पर समाजसेवी मुकेश खण्डेलवाल, राजीव खण्डेलवाल, डॉ. नमिता लश्करे, डॉ. दीप साहू, डॉ. अजय जैन, श्रीमती ममता जैन, डॉ. अनुज लश्करे, डॉ. अंकुर लश्करे, प्रमोद अग्रवाल, अधिवक्ता भरतचंद राका, जिला औषधि संघ के अध्यक्ष मंजीत सिंह साहनी, डॉ. अरूण जयसिंहपुरे, देवेंद्र चंदू गोठी, विवेक तिवारी, प्रेमशंकर मालवीय, हेमंतचंद बबलू दुबे, डॉ. जयदीप पोपली, योगी खण्डेलवाल, आलोक मालवीय, प्रदीप खंडेलवाल,डॉ. अशोक मुले, निकुंज खंडेलवाल, नीलेश खंडेलवाल डॉ. मनीष अग्रवाल, राजा गोठी, तरूण वैद्य सहित बड़ी संख्या में मौजूद थे।

माता-पिता के सपने हो रहे साकार- डॉ. लश्करे: लश्करे हॉस्पिटल चैरिटेबल एज्युकेशन प्रमोशन ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. मनीष लश्करे ने कहा कि एक ऐसा सपना जिसे मेरे पिता ने स्नेह और उद्देश्य से संजोया है। यह ट्रस्ट उनके दृष्टिकोण को दर्शाता है। जहां हर बच्चे को चाहे उसकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो अपने सपनों को पूरा करने और अपनी क्षमता को हासिल करने का अवसर देगा। मैं अपने पिता की विरासत का सम्मान करने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी महसूस करता है। उन्होंने अपना जीवन जरूरतमंद लोगों की मदद करने के लिए समर्पित कर दिया। मेरा यह वादा है कि मैं उस काम को जारी रखूंगा।

पहले साल में 72 बच्चे चयनित : ट्रस्ट ने समाज से 6 वीं से 8 वीं कक्षा के बीच के ऐसे बच्चे चयनित किए जिनमें किसी की माता नहीं है तो किसी के पिता नहीं है और कोई गरीब बच्चा जिसने 80 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किए हैं उनको पाठ्य सामग्री के रूप में बैग, कॉपियां, ज्योमेट्री बॉक्स, टिफिन बॉक्स, स्कूल शू, पानी की बोतल वितरित की गई।

ऑस्कर नॉमिनेट : अनुजा

दो बहनों की अनोखी कहानी

फ़िल्म की कहानी में इन बहनों के सामने ये चुनौती है कि वो कैसे इस अहम फैसले तक पहुंचती हैं। ज़ाहिर है ये फ़ैसला इन बहनों की ज़िंदगी बदल सकता है। 'अनुजा' के डायरेक्टर एडम जे ग्रेव्स ने यूनिवर्सिटी ऑफ पेंसिलवेनिया से बीए और पीएचडी की पढ़ाई की। वो लंबे वक्त तक बनारस में भी रहे।

भारतीय कहानी पर आधारित शॉर्ट फिल्म 'अनुजा' ऑस्कर्स यानी 'द अकेडमी अवॉर्ड' के लिए नॉमिनेट हुई है। ये शॉर्ट फ़िल्म 23 मिनट की है। 'अनुजा' बेस्ट लाइव एक्शन शॉर्ट फ़िल्म कैटेगरी में नॉमिनेट हुई है। 'अनुजा' के लेखक और डायरेक्टर एडम जे ग्रेव्स हैं. प्रियंका चोपड़ा जोनास अनुजा की एक्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर हैं। फिल्म के नौ प्रोड्यूसर्स में से एक गुनीत मोंगा कपूर भी हैं। 2023 में 'बेस्ट शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री' कैटेगरी में ऑस्कर जीतने वाली भारतीय डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'द एलीफेंट व्हिस्परर्स' की प्रोड्यूसर भी गुनीत मोंगा थीं। ये ऑस्कर जीतने वाली पहली भारतीय डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म थी। गुनीत की शॉर्ट फिल्म 'पीरियड' भी ऑस्कर्स में सफल रही थी।

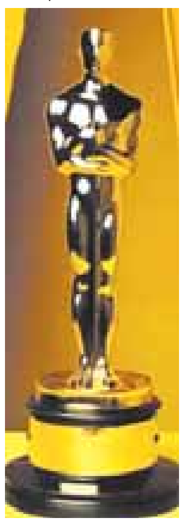

'अनुजा' फिल्म दो बहनों की कहानी है, जो दिल्ली की एक कपड़ा फैक्ट्री में काम करती हैं। इस दौरान ज़िंदगी की चुनौतियां और दो बहनों की बातचीत के ज़रिए फ़िल्म की कहानी आगे बढ़ती नजर आती है। अनुजा की उम्र फ़िल्म में 9 साल है और वो अपनी बहन पलक के साथ रहती है। अनुजा का किरदार सजदा पठान और पलक का किरदार अनन्या ने निभाया है। सजदा 'सलाम बालक ट्रस्ट' के सेंटर में रहती हैं। ये ट्रस्ट बाल श्रम से छुटकारा, लड़कियों की शिक्षा, अवसर दिलाने और रहने का ठिकाना उपलब्ध करवाने की दिशा में काम करता है।

फिल्म के ट्रेलर में ये बहनें बोर्डिंग स्कूल में पढ़ाई, मैटरिमोनियल विज्ञापनों पर बातें करती सुनाई देती है। लड़कियों को समाज में जिन

घूरती नज़रों से जूझना पड़ता है, उसकी भी एक झलक 'अनुजा' के ट्रेलर में दिखती है। फिल्म में अनुजा को स्कूल में पढ़ने का एक मौका मिलता है। फ़िल्म की कहानी में इन बहनों के सामने ये चुनौती है कि वो कैसे इस अहम फैसले तक पहुंचती हैं। ज़ाहिर है ये फ़ैसला इन बहनों की ज़िंदगी बदल सकता है। 'अनुजा' के डायरेक्टर एडम जे ग्रेव्स ने यूनिवर्सिटी ऑफ पेंसिलवेनिया से बीए और पीएचडी की पढ़ाई

की। वो लंबे वक्त तक बनारस में भी रहे।

एडम ने बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी से संस्कृत की पढ़ाई की। एडम ने राजस्थान, बिहार, यूपी और मध्य प्रदेश की कई एनजीओ से भी जुड़े रहे। फिल्म की प्रोड्यूसर सुचित्रा मत्तई हैं, जो एडम की पत्नी हैं। यूनिसेफ के मुताबिक, दुनिया में औसतन 10 में से एक लड़की बाल श्रम से जूझ रही होती है। एडम इस आंकड़े और अपने आस-पास की बच्चियों की हालत को इस फ़िल्म को बनाने की वजहों में गिनाते हैं। एडम कहते हैं कि मैं जिन लड़कियों से मिला वो मुश्किल हालात के बावजूद काफी प्रेरक लगीं, वो गिफ्टेड थीं। इन लड़कियों की काबिलियत से प्रभावित हुए बगैर रहना नामुमकिन था। इन लड़कियों के अनुभवों पर फ़िल्म बनाना ज़रूरी था।

ऑस्कर जीतने वाले भारतीयों

- 1983ः भानू अथैया को फिल्म 'गांधी' के लिए 'बेस्ट कॉस्ट्यूम डिजाइनर कैटेगरी के लिए ऑस्कर मिला था।
- 1992ः भारतीय फिल्मकार सत्यजीत रे को 'ऑनररी लाइफ टाइम अचीवमेंट' पुरस्कार से नवाज़ा गया था।
- 2009ः रसूल पोकुट्टी को 'स्लमडॉग मिलियनेयर' फ़िल्म के लिए 'साउंड मिक्सिंग' में ऑस्कर मिला था।
- 2009ः 'स्लमडॉग मिलियनेयर' फ़िल्म के लिए 'ओरिजिनल सॉन्ग' के लिए गुलज़ार और 'ओरिजनल स्कोर' के लिए एआर रहमान को भी अवार्ड मिला था।
- 2023ः 'द एलीफैंट व्हिस्परर्स के लिए गुनीत मोंगा और कार्तिकी को भी 'बेस्ट डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट कैटेगरी' में ऑस्कर मिला था।
- 2023ः फ़िल्म 'आरआरआर' के गाने 'नाटू-नाटू' के लिए संगीतकार किरावानी और गीतकार चंद्र बोस को 'ओरिजिनल सॉन्ग' कैटेगरी में ऑस्कर मिला।

इसके अलावा भारतीय मूल के राहुल ठक्कर, कोटालांगो लियोन को 2016 और विकास को 2018 में 'अकेडमी अवॉर्ड फॉर टेक्निकल अचीवमेंट' मिला।

रियल बॉक्स

हिंदी दर्शकों पर दक्षिण का दबदबा

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

दक्षिण भारत की फिल्में हिंदी दर्शकों के बीच काफी लोकप्रिय हैं। इन फ़िल्मों की सशक्त कहानियां और भावनात्मक गहराई के कारण ये दर्शकों को काफी पसंद आती हैं। दक्षिण भारतीय फिल्मों की लोकप्रियता के कुछ कारण ये भी हैं कि साउथ की फ़िल्में जमीन से जुड़ी होती हैं। इनमें जीवन की सच्चाई दिखाई जाती है। साउथ की फिल्मों में कहानी के मुताबिक कलाकारों की अहमियत कुछ खास होती है। इन फ़िल्मों में लोककथाओं और आध्यात्म से जुड़े विषय दिखाए जाते हैं। इन फ़िल्मों में कहानियां मुख्य तत्व होती हैं। ये फ़िल्में तेलुगु, तमिल, मलयालम, और कन्नड़ जैसी भाषाओं में बनती हैं। कुछ सालों से हिंदी दर्शकों में भी साउथ फिल्मों का भारी क्रेज नजर आ रहा है। पिछले साल भी साउथ फिल्मों का बॉक्स ऑफिस पर दबदबा रहा। बाहुबली, पुष्पा-2, आरआरआर, कांतारा, कल्कि 2898 एडी और 'हनुमान' को बॉक्स ऑफिस पर काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिला। कलेक्शन के मामले में भी ये कई बॉलीवुड फिल्मों पर भारी पड़ीं। दक्षिण भारतीय फिल्मों को टॉलीवुड, कॉलीवुड, सैंडलवुड, और मॉलीवुड जैसे नामों से जाना जाता है जैसे मुंबई फिल्म इंडस्ट्री को बॉलीवुड कहा जाता है।

हाल के वर्षों में हिंदी के दर्शकों में सबसे बड़ा अंतर उनकी पसंद को लेकर आया। वे औसत दर्जे की फिल्में देखना पसंद नहीं करते। उन्हें ऐसी कहानियां चाहिए जो उनके दिल के साथ दिमाग तक पहुंचे। यही कारण है कि साउथ का सिनेमा इस मामले में हिंदी से बहुत आगे निकल गया। जबकि, हिंदी के दर्शकों की अपेक्षा पर हिंदीभाषी सिनेमा खरा नहीं उतर पा रहा। 'बाहुबली' के बाद 'आरआरआर' और 'पुष्पा' सीरीज की फिल्मों ने इसे साबित कर दिया! याद करने पर भी याद नहीं किया जा सकता कि ऐसी कौनसी हिंदी फिल्म थी, जिसने बड़े वर्ग के दर्शकों को प्रभावित किया। मुगले आजम, शोले और 'बॉबी' तो अब तो अब मिसाल बनकर रह गई। उत्तर के दर्शकों को बाहुबली, आरआरआर, पुष्पाः द राइज़ या मंजुम्मेल बॉयज जैसी हैरतअंगेज प्रभाव पैदा करने वाली फिल्में ही रास आने लगी। हिंदी और और साउथ के सिनेमा के बीच कंटेंट के हिसाब से खाई चौड़ी होती जा रही है। हिंदी में में अक्सर कहानी से ज्यादा चमक-दमक और ग्लैमर पर फोकस किया जाता है। जबकि, साउथ फिल्म मेकर्स चमक-दमक को कहानी पर हावी नहीं होने देते। साउथ में कभी कहानी से समझौता नहीं किया जाता। वहां के फिल्मकार जानते हैं कि दर्शक एक्शन के साथ कहानी भी देखना चाहते हैं। साउथ के निर्माता दर्शकों की इस इच्छा को नजरअंदाज नहीं करते, जिसका बेहतर नतीजा उन्हें बॉक्स ऑफिस पर भी देखने को मिलता है।

हिंदी के दर्शक आज साउथ फिल्मों को लेकर कुछ ज्यादा ही उत्सुक है। हिंदी फिल्म की रिलीज पर दर्शक उतना उत्साहित नहीं होता, जितना वह साउथ की फिल्मों को देखना चाहता है। इसलिए कि जब हिंदी की कोई बड़ी फिल्म रिलीज होती है, तो हिंदी बेल्ट में तो कई जगह पर वह दर्शकों को प्रभावित कर लेती है। लेकिन, साउथ रीजन में हिंदी की फ़िल्में नहीं चल पाती। इसी से समझा जा सकता है कि साउथ की फिल्में अब रीजनल भाषा की फ़िल्में नहीं रही, बल्कि वे हिंदी के दर्शकों को भी उतना ही प्रभावित करती हैं। लेकिन, सवाल उठता है कि हिंदी की फिल्में साउथ में अच्छा कारोबार क्यों नहीं कर पाती। जबकि, साउथ की फ़िल्में हिंदी बेल्ट में आसमान फाड़ देती है। कुछ समय से साउथ की फिल्मों का दबदबा सिर्फ देश में ही नहीं, दुनियाभर में देखने को मिल रहा है। आश्चर्य इस बात का कि साउथ के जो हीरो चार राज्यों तक सीमित थे, वे देश के अलावा दुनियाभर में

भी पसंद किए जा रहे हैं। ऐसा भी नहीं कि साउथ के किसी एक डायरेक्टर या हीरो की ही फिल्म सफल हो रही है। दर्शक किसी बड़े सुपरस्टार के प्रभाव से ही साउथ की फिल्में नहीं देख रहे। कोई भी हीरो और डायरेक्टर हो, साउथ की फिल्मों को हर जगह पसंद किया जा रहा।

इस रीजन की फिल्मों का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन इस बात का प्रमाण भी है। पुष्पा, पुष्पा-2, आरआरआर, बाहुबली और इस जैसी कई फिल्मों को हिंदी दर्शकों ने हाथों-हाथ लिया है। इन्हें इंतजार इस बात का रहता है कि कब कोई साउथ की नई फिल्म रिलीज हो और वे देखें। सिर्फ इसलिए कि साउथ की फिल्मों के कथानक में वो ताकत है, जो हिंदी के दर्शकों को प्रभावित करती है। इस बात को निःसंकोच कहा जा सकता है कि हिंदी के फिल्मकारों में एक ही लीक पर चलने की आदत है, जो साउथ में कहीं नजर नहीं आती। नए प्रयोग करने से साउथ के डायरेक्टर चूकते नहीं, पर उत्तर भारत में बनने वाली हिंदी फिल्मों में वो बात नहीं! यहां हीरो और हीरोइन को हमेशा खूबसूरत दिखाने की होड़ सी लगी रहती है, जबकि साउथ में इसका उल्टा है। इसका सबसे बड़ा सबूत है 'पुष्पा' जिसके स्मार्ट हीरो को काला और बदसूरत बनाने के लिए उसका मेकअप किया गया था।

यह भी सच है कि हिंदी के शाहरुख खान, सलमान खान और रणबीर कपूर जैसे बड़े कलाकारों की कई फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचाया। लेकिन, साउथ में इनकी कई फिल्मों को नकार दिया गया। यही वजह है कि आजकल हिंदी की कई फिल्मों में साउथ के किसी हीरो को शामिल करके फिल्मों को सफल बनाने की गारंटी बना ली जाती है। 'ब्रह्मास्त्र' और 'कल्कि' की सफलता से इसे आसानी से समझा जा सकता है। 'आरआरआर' में अजय देवगन और आलिया भट्ट मेहमान भूमिकाओं में आए, जबकि 'केजीएफ-2' में संजय दत्त और रवीना टंडन अच्छा खासा रोल नजर आया। साउथ के फिल्मकारों ने साबित कर दिया कि उनकी कहानी फिल्माने की कला से भी असाधारण फिल्म बनाई जा सकती है। दक्षिण की डब फिल्में हिंदी के दर्शकों को जमकर आकर्षित कर रही हैं। पारंपरिक दर्शकों को तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम सिनेमा की स्वीकार्यता बढ़ी है। सनी देओल, सलमान, शाहरुख और अक्षय कुमार की फिल्मों को पसंद करने वाले दर्शक महेश बाबू, रामचरण, यश, प्रभास, अल्लू अर्जुन, जूनियर एनटीआर के दीवाने हो गए।

हिंदी के दर्शकों पर साउथ का जादू कब चला, इसे जांचा जाए तो याद आता है कि आठ साल पहले तेलुगू फिल्मकार एसएस राजामौली की फिल्म 'बाहुबलीः द बिगनिंग' ने उत्तर भारत के हिंदी में जो धमाका किया था, उसका कोई तोड़ नहीं है। उसके बाद साउथ की फिल्मों की चमक उत्तर के हिंदी बेल्ट में तेज होती गई। 'बाहुबली' के बाद राजामौली की ही फिल्म 'आरआरआर' ने बॉक्स ऑफिस पर कमाई का रिकॉर्ड बना दिया। 'केजीएफ' सीरीज और 'पुष्पाः द राइज' ने भी अच्छी कमाई की। 'केजीएफ' और 'पुष्पा' की छोटी-सी कहानी को जिस तरह भव्य रूप में परदे पर पेश किया, वो भी कमाल ही है। इन फिल्मों में एक्शन सीक्वेंस और के सहारे कथानक रचा गया। इसी से समझा जा सकता है कि हिंदी फिल्मों के मुकाबले दक्षिण की फ़िल्में आज के दर्शकों की नब्ज ज्यादा अच्छी तरह समझने लगी हैं। अब साउथ की हिंदी में डब फिल्मों को तालियां और सीटियां मिल रही है। 'जय भीम' जैसी फिल्म भी फिल्मों के गंभीर दर्शकों को पसंद आने लगी।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

अजय देवगन और संजय दत्त का 'रेंजर' में धमाल

बॉलीवुड के दो बड़े सितारे अजय देवगन और संजय दत्त एक साथ एक फिल्म में नजर आने वाले हैं. ये फिल्म है 'रेंजर', जो एक जंगल एडवेंचर फिल्म होगी। अजय देवगन और संजय दत्त की जोड़ी परदे पर पहली बार एक दूसरे के खिलाफ लड़ते हुए दिखाई देगी। संजय दत्त इस फिल्म में नेगेटिव रोल प्ले कर रहे हैं और वो अजय देवगन से भिड़ते नजर आएंगे। फिल्म की शूटिंग 2025 की गर्मियों में शुरू होने की संभावना है, जबकि फिलहाल फिल्म का प्री-प्रोडक्शन काम चल रहा है।

'रेंजर' के लिए अजय और संजय दोनों के लिए स्पेशल लुक डिजाइन किए जा रहे हैं, जो जंगल के वातावरण में फिट होंगे। फिल्म का निर्माण लव रंजन की प्रोडक्शन कंपनी 'लव फिल्म्स' कर रही है और इसे बड़े पैमाने पर शूट किया जाएगा। अजय देवगन इस समय अपनी दो अन्य फिल्मों की शूटिंग में व्यस्त हैं पहली 'दे दे प्यार दे 2' जो एक रोमांटिक कॉमेडी है और दूसरी 'धमाल 4' जो एक हास्य फिल्म है। इसके अलावा, उनकी फिल्म 'रेड 2' भी जल्द ही रिलीज होने वाली है, जिससे अजय के फैंस को और भी खुशी मिल सकती है। रेंजर' फिल्म में अजय देवगन और संजय दत्त के किरदारों की लड़ाई लोगों के लिए एक नया और शानदार एक्सपीरिएंस होगा। ये फिल्म एक जंगल एडवेंचर है और इसकी कहानी के हिसाब से दोनों सुपरस्टार्स के लुक और किरदारों में बदलाव किए जा रहे हैं। ये फिल्म न केवल एक्शन से भरपूर होगी, बल्कि इसके सस्पेंस और ट्विस्ट्स भी लोगों को अट्रैक्ट करेंगे। साल 2025 में रिलीज होने वाली ये दोनों फिल्में, सलमान-सूरज की जोड़ी और अजय-संजय की जोड़ी, बॉलीवुड के फैंस के लिए खास हो सकती हैं. दोनों फिल्मों में न केवल जबरदस्त एक्शन और रोमांस होगा, बल्कि ये सुपरस्टार्स के करियर के नए अध्याय का भी हिस्सा होंगी।

कुंभ ही नहीं परदे पर भी छाए बाबा और साधु

अशोक जोशी

हिंदी सिनेमा में बाबाओं के दर्शन प्रायः दुर्लभ होते हैं। यदि फिल्मों में किसी बाबा का चित्रण किया जाता है, तो उनमें से ज्यादातर पाखंडी बाबाओं के ढोंग और चालबाजियों को ही चित्रित किया जाता है।

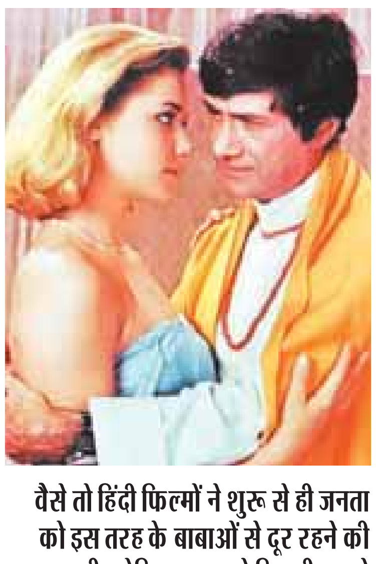

वैसे तो हिंदी फिल्मों ने शुरू से ही जनता को इस तरह के बाबाओं से दूर रहने की सलाह दी। लेकिन, हम इसे फिल्मी मानते हुए बाबाओं के चक्कर में पड़ते गए और नतीजा इस रूप में सामने आया कि बॉलीवुड में दिखाए जाने वाले पाखंडी बाबाओं की हरकत सच लगने लगी है।

हिंदुस्तान को साधुओं और बाबाओं के देश के नाम से जाना जाता रहा है। यहां जीवन के सभी क्षेत्रों में बाबाओं के दर्शन होते है। सिनेमा भी इससे अछूता नहीं है। यहां फिल्म के कथानक से लेकर वास्तविक जीवन में भी बाबाओं और साधुओं का बोलबाला रहा है। यह बात अलग है कि हिन्दी फिल्मों के बाबा स्टीरियोटाइप होते हैं। यदि कोई विलेन बाबा बना है तो वह हीरोइन या उसके घर वालों को किडनेप करने के लिए यह स्वांग बनाता है और यदि कोई हीरो बाबा का स्वांग भरता है तो वह हीरोइन को अपने प्रेम जाल में फंसाने के लिए यह सब करता है। ज्यादातर फिल्मी बाबा बुराई का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। कई बार तो ऐसा भी हुआ है कि आर्कलाइट की चकाचौंध से मुक्ति पाने के लिए प्रेमनाथ, शशिकला, विनोद खन्ना, विजय आनंद, महेश भट्ट, अनु अग्रवाल ने संन्यास का रास्ता अपनाया लेकिन वहां उनका मन नहीं रमा। हाल ही में महाकुम्भ में ग्लैमर क्वीन और अपराध जगत से जुड़ी ममता कुलकर्णी ने महामंडलेश्वर का चोगा पहना है लेकिन वहां भी उनकी अदा और अभिनय के ज्यादा दर्शन हुए हैं।

इन दिनों प्रयागराज में महाकुंभ पूरे शबाब पर है। देश विदेश से श्रद्धालु डुबकी लगाने प्रयाग आ रहे हैं। जिस तरह महाकुंभ में जन सैलाब उमड़ रहा है, उसे देखते हुए इसे विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक महोत्सव माना जा रहा है। कुम्भ में स्नान के अलावा जो सबसे ज्यादा चर्चित है वह है यहां आए साधु सन्यासी और बाबा। इन बाबाओं में नागा बाबा तो ऐसे अनूठे बाबा है जो 12 साल तक गायब रहने के बाद अचानक कुम्भ में ही दिखाई देते हैं और कुम्भ के समापन होने के बाद पता नहीं कहां गायब हो जाते हैं। यूं तो कुम्भ में अधिकांश बाबा धार्मिक प्रवृत्ति के ही हैं और पुण्य कमाने आए हैं, लेकिन इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता है कि बाबाओं के इस सैलाब में कुछ पाखंडी बाबा भी शामिल हैं जो जन आस्था का फायदा उठाकर उन्हें ठग रहे हैं। यूपी

पुलिस ने पिछले दिनों कुछ पाखंडी बाबाओं को पकड़ कर बाहर भी किया है। हमारे धार्मिक आयोजनों में तो बाबाओं का दर्शन सुलभ साध्य है।

फिल्मों में पाखंडी बाबाओं का राज खोलने का सिलसिला काफी पुराना है। सलीम जावेद ने अपनी फिल्म 'शान' में पानी पर चलने वाले बाबा की कहानी को फिल्म के कथानक से जोड़ने का प्रयास किया था। इससे पहले रणधीर कपूर की फिल्म 'पोंगा पंडित' भी इसी तरह के बाबाओं के पाखंड को उजागर करता था। एचएस रवैल ने अपनी फिल्म 'संघर्ष' में काशी में पंडो की मनमानी और लूटपाट से पर्दा उठाने का काम किया था। इसके बाद हिन्दी फिल्मों में कहीं न कहीं इस तरह के बाबाओं के किस्से फिल्मों में आते रहे जाते रहे जिन्हें दर्शकों ने गंभीरता से नहीं लिया। आमिर ने फिल्म 'पीके' के जरिए अंधविश्वास को खत्म करने की ईमानदार कोशिश की। फिल्म आस्था के नाम पर दुकान चलाने वाले एक बाबा (सौरभ शुक्ला) की दिलचस्प तरीके से पोल खोलती है। इसके अलावा हिंदू हो या इस्लाम या फिर ईसाई, हर धर्म की बुराइयों को मनोरंजक तरीके से सामने लाने में फिल्म कामयाब रही। लेकिन, इससे हासिल क्या हुआ? आज भी राजनीतिक संरक्षण प्राप्त कई बाबा लोगों को छल रहे हैं।

जनभावना का खिलवाड़ कर पाखंडी बाबा उनकी बेबसी का फायदा उठाकर अपना अनुयायी बनाते हैं। इस संख्या का आंकड़ा लाखों तक पहुंच जाता है तो फिर क्या कानून और क्या राजनीति, पूरा सिस्टम ही इनका गुलाम बन जाता है। अजय देवगन की फिल्म 'सिंघम रिटर्न्स' में भी इसी तरह की एक कहानी दिखाई गई, जिसमें बाबा पूरे सिस्टम को गुलाम बना चुका होता है। नेता उसकी चौखट पर हाजिरी लगाते हैं और पुलिस उस चौखट को लांघने करने का साहस नहीं जुटा पाती। आखिरकार, फिल्म का हीरो, ढोंगी बाबा को बेनकाब कर देता है। कुछ इसी तरह की एक कहानी मार्च 2016 में आई, जिसका नाम था 'ग्लोबल बाबा।' फिल्म में दिखाया गया कि कैसे एक कुख्यात अपराधी भगवा ओढ़कर साधु बन जाता है और सिस्टम का इस्तेमाल कर सरकार तक को हिलाने की ताकत रखता है। हालांकि, बुराई पर अच्छाई की विजय के फार्मूले के हिसाब से इस फिल्म में भी बुराई हारता है और अच्छाई की जीत होती है। पर, पंचकूला को याद करके सब हवा-हवाई लगने लगता है।

देव आनंद साहब की साल 1965 में आई 'गाइड' फिल्म की तरह, जिसमें फिल्म का किरदार राजू (देव आनंद) जेल से रिहाई के बाद अकेला भटकता रहता है। एक दिन वह कुछ साधुओं की टोली के साथ गांव के मंदिर के अहाते में सो जाता है और अगले दिन उस मंदिर से निकलने से पहले एक साधु सोते हुये राजू के ऊपर पीताम्बर वस्त्र ओढ़ा देता है। अगले दिन गांव का एक किसान, भोला, पीताम्बर वस्त्र में सोते हुए राजू को साधु समझ लेता है। भोला यह बात सारे गांव में फैला देता है और गांव वाले राजू को साधु मान लेते हैं और उसके लिए भोजन और दूसरे उपहार लेकर आते हैं और अपनी समस्याएं भी उसे बताते हैं। राजू को उस गांव में स्वामी जी के नाम से जाना जाने लगता है। हालांकि यह पाखंडी साधू रहता है लेकिन जनता की आस्था के सामने उसका पाखंड समाप्त हो जाता है और वह वास्तविक साधु बनकर उनके लिए बरसात करवा देता है। लेकिन आजकल ऐसे साधु मिलते कहां है?

देव आनंद की दूसरी फिल्म 'स्वामी दादा' में भी पाखण्डी बाबाओं की कहानी कही गई है। पिछले दिनों बनी 'ओ माय गॉड' की दो किस्त पर्दे पर आयी और उनमें भी पाखंडी बाबाओं की पोल खोल कर सफलता अर्जित की गई। इसी विषय पर 'क्रोधी' जैसी फिल्में भी आ चुकी है। 'उपकार' में प्राण साधु था या शैतान समझ में नहीं आता है। लेकिन, साधु और शैतान में जरूर उसे साधु का चोगा पहने शैतान बताया गया है। अशोक कुमार भी चित्रलेखा और पूरब पश्चिम में साधु बन चुके हैं। लेकिन, कुंभ में आए बाबाओं की तुलना में फिल्मी बाबाओं की कहानी छोटी लगती है।

'ताकत वतन की हमसे है...!'

प्रकाश पुरोहित

म **कल वह काम पर नहीं आई। पता चला टाउनशिप की** और भी कामवाली छुट्टी पर थीं। ये सभी महिलाएं गई थीं महू, जहां बाबा साहेब आंबेडकर के स्मारक पर समारोह होना था। कुछ घरों से तो छुट्टी मिल गई और कुछ ने पैसे काट लिए कि पांच सौ रु. तो मिले ही हैं सभा में शामिल होने के, और खाना भी मुफ्त। दिन भर सोशल मीडिया पर कुछ चेहरे आते रहे और यह बताते रहे कि पांच सौ रु. का कहा था और कुछ नहीं मिला, खाना भी नहीं दिया। गांव से लाकर यहां छोड़ दिया है, अब कैसे जाएंगे

पता नहीं! कहा जा रहा था कि कांग्रेस के नेता लेकर आए थे और अब कोई पूछ नहीं रहा है।

'तुम्हें भी पांच सौ रु. मिले या नहीं?' दूसरे रोज जब काम पर आई तो पूछा।

'अपने जेब से किराया-भाड़ा लगा कर गई थीं हम सभी। खाना भी घर से खा लिया था।' उसने झाड़ू लगाते हुए बताया।

'खबर तो यही थी कि भीड़ इकट्ठा करने के लिए पैसे दिए गए और खाना भी था?' पूछ लिया।

'हम ना तो किसी के बुलाने पर गए थे और ना किसी के कहने पर। हम मेहनत से इतना कमा लेती हैं कि एक रोज के पांच सौ रु. से हमें फर्क नहीं पड़ता। वैसे भी मेहनत पर भरोसा है, किसी की भीख पर नहीं। यह तो हमारी सोच है कि अच्छे काम के लिए एक रोज का काम खोटी हो तो करना चाहिए।' उसने बताया।

'ऐसा कौन-सा अच्छा काम था?' जानना चाहा।

'बाबा साहेब आंबेडकर ने जो संविधान बनाया है, हम जैसे गरीब-गुरबों के लिए ही तो है। अगर कोई उनके काम की तारीफ कर रहा है, उसे बदलने से रोक रहा है, तो उसके साथ खड़ा होना चाहिए ना!' यह एकदम नया मुद्दा निकल आया।

'तो तुम कांग्रेसी हो, राहुल गांधी की भक्त...?' सवाल तो होना ही था।

'हमें यह सब नहीं पता, हम तो सिर्फ बाबा साहेब के लिए गए थे। हम किसी पार्टी में नहीं हैं, लेकिन जो बाबा साहेब के लिए लड़ रहा है, खड़ा हो रहा है, तो हम क्या एक दिन उसे नहीं दे सकते? मेरे अपने घर में ही इस बात पर बहस होने लगी थी कि तुम्हें क्या पड़ी है जाने की? राजनीति तो गंदी है, हमें इसमें नहीं पड़ना है। तब भी मैंने यही कहा कि यदि सभी ऐसा सोच लेंगे तो राजनीति अच्छी कैसे होगी, क्योंकि देश तो ये ही लोग चलाते हैं। कोई संविधान बदलने की बात कर रहा है और हम उसका विरोध नहीं करें, यह तो कोई बात ही नहीं हुई। बस, हम तो यह बताने गई थीं कि बाबा साहेब के काम को ना तो बदलने देंगे और ना ही कम होने देंगे।' बिलकुल नेता की तरह बोल रही थी वह।

'ये तो कांग्रेस की उड़ाई अफवाह है कि संविधान बदल रहे हैं?'

'बगैर आग के कहीं धुंआ भी होता है साहेब। फिर हम देख नहीं रहे हैं कि गरीब और गरीब हो रहा है और अमीरों के खजाने भरते जा रहे हैं। आज भी गांव में दलित को घोड़े पर नहीं बैठने देते, मूंछें नहीं रखने देते और बड़ी नौकरियों में कितने दलित हैं। सिर्फ राष्ट्रपति दलित बना देने से बाकी के साथ अन्याय और अत्याचार तो बंद नहीं हो जाएगा ना! अयोध्या के राम मंदिर के समारोह में तो उन्हें भी नहीं बुलाया गया। क्या हमें समझ नहीं आ रहा है? अगर आज चुप रहेंगे तो फिर कल भुगतना होगा।' उसके साफ विचार तो दंग किए दे रहे थे।

'तुम्हारे वहां जाने से क्या होगा?' पूछा।

'ऐसा सोचने वाले कभी कुछ कर ही नहीं सकेंगे। हम तो सिर्फ इसलिए गई थीं कि बता दें कि हम कानून बदलने वालों के साथ नहीं हैं और हम उनके साथ खड़े हैं, जो बाबा साहेब के साथ हैं। यह बाबा साहेब का ही संविधान है कि हम मेहनत-मजदूरी करके भी शान से जी रहे हैं, नहीं तो हमने अपने गांव में बंधुआ मजदूर देखे हैं, पीढ़ियों तक, आज भी हालत नहीं सुधर रही है कि उन्हें पता ही नहीं है कि उनके अधिकार क्या हैं। बाबा साहेब की वजह से ही तो हमें सही और गलत का पता चला है। हम तो वैसे भी साल में दो बार महू जाते ही हैं, धन्यवाद देते हैं कि उनकी वजह से हमारी भी गिनती मनुष्यों में होती है।' वह बोले जा रही थी।

'क्या हमें पांच सौ रु. बुरे लगते हैं, सरकारी लोग भी दे रहे थे, लेकिन हम तो अपनी वजह से गई थीं, किसी लालच में नहीं। अगर हमारे वहां खड़े होने से सरकार पर असर होता है तो यही हमारा इनाम है, मेहनताना है, मजदूरी है। बहुत सह लिया, अब नहीं। जहां भी मौका मिलेगा, बाबा साहेब के लिए बगैर हानि-लाभ के खड़े रहेंगे हम लोग। कोई अफसोस नहीं कि एक दिन की मजदूरी काट ली। बहुत छोटी सी है, उस बड़े काम के लिए, जिसे आंबेडकर जी ने सभी के लिए बनाया था... इसलिए हमें किसी पार्टी से नहीं जोड़ें, जो अच्छे काम के लिए आगे आएगा हम भी उसके साथ ऐसे ही खड़े होते रहेंगे।' कहते हुए वह बर्तन मांजने चली गई। मुझे यह अफसोस दे गई कि इतनी-सी बात हमें समझ क्यों नहीं आती कि भीड़ सिर्फ गरीबों की ही क्यों हो, क्या हमें संविधान से लगाव नहीं है? मुझे भी उस रोज महू में क्यों नहीं होना चाहिए था?

बचपन को नादान न समझें, वो कुछ भूलता नहीं

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

जी ऐसा कौन है जो कुछ भी नहीं भूलता ऐसा क्या है जो भूलने लायक नहीं बहुधा हम इंसानों की ज़िंदगी में जो बहुत कुछ अच्छा बुरा घटता है पर इंसान की फितरत है बुरे के बारे में सोच सोच के परेशान होने की और ये फितरत सबसे ज़्यादा मैंने नोटिस की 'बचपन' में। हम हमेशा सोचते हैं!

बचपन तो खिलंदड़ है
सब बिसर जायेगा
पर बोया है जो बीज हमने
वो पौधा किधर जायेगा

कोई माँ बाप अपने बच्चों को गलत परवरिश नहीं करते या उन्हें बुरी बातें नहीं सिखाते पर अनजाने में ही माँ, बाप, समाज, स्कूल कुछ बातें बचपन को बता देते हैं जो बड़े होकर नासूर बन के उनके जीवन में चुभते रहते हैं।

जहाँ तक मैं अपने सब भाई बहन की बातें करूँ तो आज भी इस उम्र में जब सब हम इकट्ठे होते हैं तो उसमें हम अपने बच्चों को शामिल कर लेते हैं और वो लोग भी हमारी बातें सुनकर हंस हंस कर लोटपोट हो जाते हैं एक स्वस्थ बचपन, एक स्वस्थ युवा बनाता है और बुढ़ापा भी सुखद होता है जी हाँ सुखद बुढ़ापा भी क्योंकि कई बार बचपन में बनी ग्रंथियाँ मृत्यु के साथ जाती हैं यूँ तो बचपन में बच्चों को मारना, उन्हें डरपोक बनाता है, उनमें हकलापन आ जाता है स्टेज फीयर बढ़ाता है, 'तुम कुछ नहीं बन पाओगे' का डायलॉग उनके कुछ बनने की इच्छा शक्ति को धराशायी कर देता है।

जब मैं बच्चों की एक संस्था में काम कर रही थी वहाँ बाहर से भी बच्चे आते हैं तक एक माँ ने कहा था कि मैं अपने बेटे को आपसे मिलवाऊँ मुझे वो कुछ बताता नहीं, मैं आश्चर्य में पड़ गई मैंने तो यही देखा है कि बस्ता फेंक बच्चे मुझे घेर लेते और सब बातें बताते कभी जो मैं कहीं बिजी होती तो मैंने कह रखा था कि वो अपने बड़े भाई को बताये ताकि कैसे भी दिल हलका रहे फिर हम बाद में बात कर लेते। पर कुछ शब्द ऐसे थे जो हमारे जमाने में हमने सुने भी नहीं थे मसलन 'वाह दादी आज तो बड़ी सेक्सी लग रही हो' फिर हमारे बच्चों ने इस शब्द को सुंदर की श्रेणी में रखा। हमने भी चलने दिया पर, युवा होते ही इस शब्द

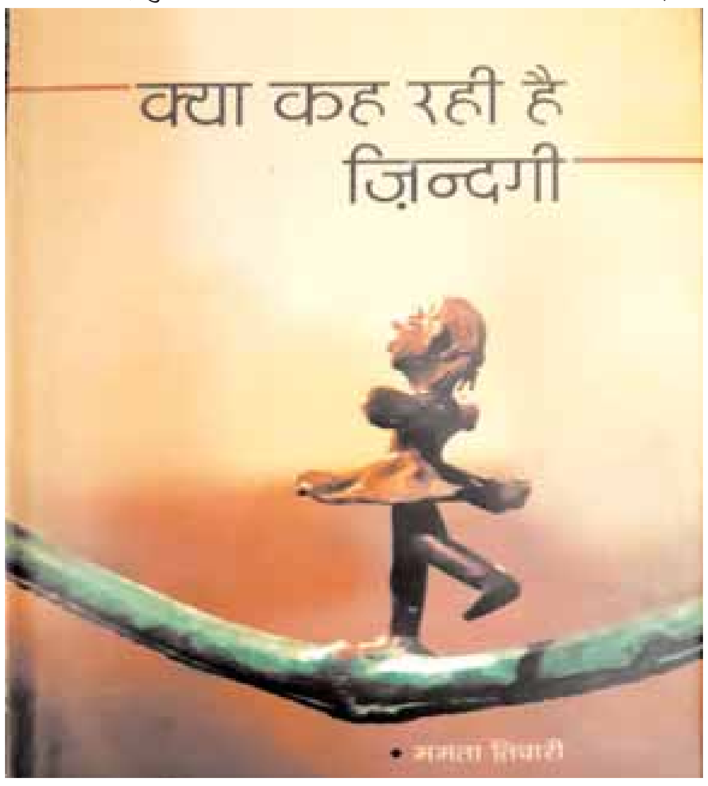

को जब उन्होंने आसानी से लोगों के जीवन में उतरते देखा तो उन्हें समझाना मुश्किल रहा। अब हम माँ-बाप ही बचते हैं स्कूल या समाज को हम नहीं समझा सकते सो बचता है 'घर' उसे इतनी मजबूती प्रदान करें और हाँ सही शिक्षा दे अभी भी अगर आप ये कहेंगे ए.आई. के ज़माने में 'कि बच्चे भगवान देता है' तो वो आपको पूरी डिलीवरी की प्रोसेस दिखा देंगे। अंग्रेजी सॉरी अब तो हिंदी मूवी में सब दिखा रहे हैं इससे पहले कि समाज या दोस्त उसे गलत शिक्षा दे उसे आप ढंग से उसकी उम्र की सीमा के हिसाब से समझा दें या आप स्वयं बाल मनोवैज्ञानिक से पूछे कि उन्हें कैसे समझाया जाये।

मेरी सहेली परेशान थी उसका बेटा अक्सर पड़ोस वाली बच्ची के साथ गंदा खेल खेलते हैं ये तो वो भी जानते थे कि ये गंदी बात है तो वो छुपकर खेलते थे सहेली ने जब उसे पकड़ा तो उसने जवाब दिया वो 7 साल का था मम्मी पापा के बीच सोता था वो लोग जब सोचते थे मैं सो गया हूँ तो मैं एक आंख खोल उन्हें देखता था जब पापा मम्मी खेल सकते हैं तो मैं क्यों नहीं। सावधानी हटी दुर्घटना घटी। उम्र के हिसाब से उसे अलग कमरे में सुलाइए और हाँ बचपन को मूर्ख ना समझे उनकी आप की हर हरकत पर नज़र है। कभी कभी मेरा छोटा बेटा हँस के कहता है जब आप को भईया से बात करनी होती थी आप मुझे बाहर खेलने भेजती थी पर मैं सब जानता था आप क्या बातें करते हैं। सबसे दुःखद और सत्य घटना बताऊँ तो आप को बहुत बुरा लगेगा मेरी सहेली की बेटी शादी नहीं करना चाहती वो पुरूषों से नफरत करती है पर मुझसे बहुत क्लोज़ है। मैंने उससे पूछा तो उसने कहा अच्छा मैं आपको ई मेल करूँगी। बचपन में वो सब बहनें इकट्ठी होती थी। उसकी माँ की बहन (मौसी) का बेटा जो खुद भी बहुत बड़ा नहीं था उसके साथ गंदी हरकतें करता था और किसी को ना बताने के लिये धमकाता था। ये सिलसिला काफी साल चला रोते-रोते मेरी सहेली ने कहा उसे मुझे तो बताना चाहिये था। उसने अपनी बहन से भी बात की पर वो मानने को तैयार नहीं। एक खूबसूरत ज़िंदगी का इतना बुरा हश्र, ज़रा सी लापरवाही से। वो लोग गप्पों और मार्केटिंग में व्यस्त रहती थी।

मेरे बेटे के दोस्त को किसी पर विश्वास नहीं होता उसके पिता ने माँ को धोखा दिया। वो अब अलग रहते हैं पर वो माँ को लेकर पजेसिव हो गया है। दुनिया के सारे मर्दों को गलत समझता है। कई बार रिश्तेदार समझाते हैं कि बेटा माँ अकेली रह जायेगी। उनकी दूसरी शादी करवा दे। 'वो भी पापा जैसा निकला' तो यहाँ तक कि खुद भी शादी से बचता रहा। आज उसका परिवार खुशहाल है पर पत्नी के लिये पजेसिव है। बच्चे पैदा नहीं करता कहता अगर लड़की होगी तो मैं तनाव में ही रहूँगा। पूरे समय उसकी सुरक्षा का खूयाल या शायद मैं उसके बॉयफ्रेंड को भी ना पसंद करूँ।

ऐसे जाने कितने बच्चे समस्याओं के बचपन बिता रहे हैं। सारी जिम्मेदारी हमारी है जो करना है हमें ही बचपन को संभालना होगा। बात नहीं बने तो बाल मनोवैज्ञानिक की सलाह लेना होगा। अब छुपाने से फर्क नहीं पड़ेगा। खैर अब गुड टच, बेड टच और सो कॉल्ड अंकलों से कैसे बचना है, बताया जाता है और फिर भी बच्चे शिकार होते हैं; तो उन्हें इसमें से निकाल उन्हें बताना होगा तुम अपराधी नहीं हो पर इस गलतफहमी में मत रहना कि 'बचपन है, भूल जायेगा'। बचपन ही तो नहीं भूलता। इसलिए समय-समय पर पूछते रहिए बचपन से और क्या कह रही है ज़िंदगी?

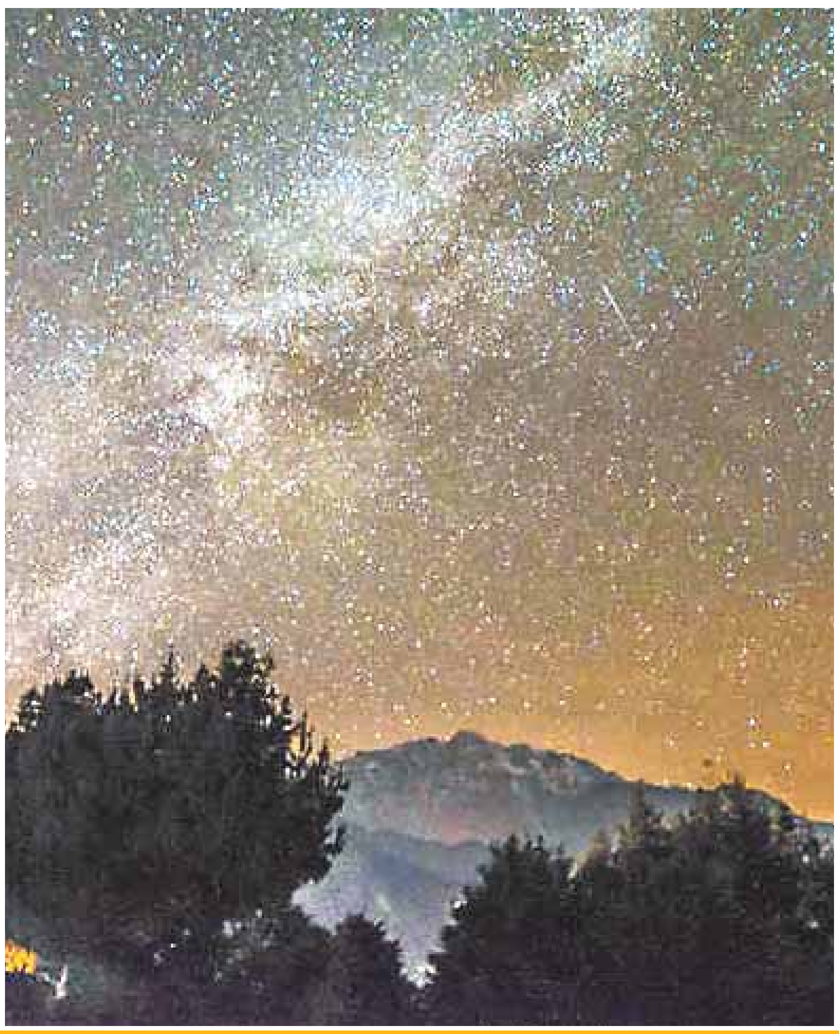

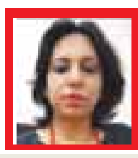

पैंडोरा बॉक्स

अनुजीत इकबाल

मन की अतल गहराइयों में
एक बक्सा पड़ा है
बंद, जर्जर, धूल से ढका
पर भीतर
आवाज़ें गूंजती हैं
सपनों के छिन्न अवशेष
कुछ रक्तरंजित यथार्थ
कुछ घाव, जो स्पर्श मात्र से
रिसने लगते हैं
यह बक्सा खुलते ही
हवाओं में घुल जाएगा
विष का पुराना स्वाद
रातें फिर से डरावनी हो जाएंगी
फिर भी
कब तक सिसकियों को
चुप रहने का आदेश दिया जाए
कब तक तड़प को
शब्दों से वंचित रखा जाए
कब तक मौन के आवरण में
घावों को सड़ने दिया जाए
आज नहीं तो कल
इस पैंडोरा के बक्से को
खोलना ही होगा
और फिर समय
एक निर्दयी वैद्य की भाँति
किसी दिन संधान करके
विष की गाँठ खोल देगा
और हम...
अग्निस्नान करके
निर्बंध, मुक्त, निर्वसन
पुनः जन्मेंगे।

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और व्यंग्यकार हैं।

आज बदल गए हैं दान के मायने

आपने बहुत से दानी देखे और सुने होंगे। कर्ण को तो खैर दानवीर की उपाधि मिली हुई थी। उनको दानवीर कर्ण के नाम से ही जाना जाता था।

बहुत साल पहले जब मैं मुंबई में रहता था तब एक सज्जन से मुलाकात हुई थी। वह अपने व्यापार को अपने बच्चों को सौंप कर दिन भर दान धर्म में जुटे रहते। वह सुबह सुबह बॉम्बे अस्पताल के नीचे दवा की दुकान के पास आकर खड़े हो जाते। जब भी कोई दवा खरीदने आता और उसके पास या तो पैसे नहीं होते या कम होते तब यह सज्जन चुपचाप उसका पैसा भर कर उसे दवा दिलवा देते। न कभी किसी से अपना नाम बताते और न ही कभी किसी से अपना काम बताते। वह दवा की दुकान मेरे मित्र की थी और मैं अक्सर वहाँ बैठा करता इसलिए इनको जान गया था। सुबह से शाम तक में न जाने कितने लोगों की मदद कर जाते।

वहीं आजकल ऐसे दानवीर पैदा हो गए हैं कि दान देने के पहले अपने नाम की घोषणा सुनिश्चित कर लेते हैं। किस पत्थर पर उनका नाम खोदा जाएगा और फिर उसे भवन में कहाँ जड़ा जाएगा, यह जानना दान से अधिक जरूरी होता है उनके लिए।

वो रकम दान के लिए नहीं नाम के लिए देते हैं। हमारे मोहल्ले में एक हनुमान मंदिर बन रहा था। मोहल्ला सेठ ने उस जमाने में 5000 रुपये दान की घोषणा कर दी जबकि पूरा मंदिर ही 50000 रुपये में बन जाने वाला था। जमीन कब्जे की सरकारी, लेबर मिट्टी भक्तों की। सेठ जी का नाम भव्य शिला पर खोद कर ऐसे लगाया गया कि हनुमान जी का नाम एकदम छोटे अक्षरों में नजर आता। कई बार तो कन्फ़्युजन हो जाता कि यह सेठ जी का मंदिर है जिसे हनुमान जी ने दान देकर बनवाया है। मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा में निश्चित ही सेठ जी ही मुख्य अथिति रहे और हनुमान जी के जयकारे से ज्यादा उनके जयकारे लगाए गए। बाद में पता चला कि मंदिर का पंडित साल भर तक सेठ जी के घर के चक्कर लगाता रहा मगर सेठ जी ने घोषित दान के 5000 रुपये कभी दिए ही नहीं। जब पंडित ने ज्यादा जोर लगाया तो उन्हें दान पेटी से चोरी के इल्जाम में थाने में पहले पिटवाया और फिर मंदिर से निकाल दिया। नया पंडित आया तो उसे पुराना किस्सा तो कुछ पता नहीं था, दान की बात भी खत्म हो गई। वो दान शिला पर सेठ जी का नाम पढ़ता और हनुमान जी से ज्यादा सेठ जी की भक्ति में नतमस्तक रहता।

दानियों की केटेगरी में एक केटेगरी रक्त दानियों की भी है। एक बार खून दान करेंगे और बिस्तर पर लेटे टेनिस बॉल पकड़े रक्त दान की तस्वीर सोशल मीडिया पर इतनी बार चढ़ाएंगे कि लगने लगता है पूरे हिंदुस्तान के हर प्राणी की रगों में इनका ही खून दौड़ रहा है। जैसे लंगर में खाना बंटते देखकर भूख न भी लगी हो तो भी खाने का मन कर ही जाता है। वैसे ही इनको रक्त दान करता देख लगने लगता है कि चलो, एक बोतल चढ़वा ही लेते हैं। थोड़ा एक्स्ट्रा ही खून हो जाएगा तो कोई नुकसान तो करेगा नहीं।

चुनाव सामने है और आजकल मत दानियों की बहुत पूछ हो रही है। हर नेता हाथ जोड़ कर मतदान के लिए निवेदन कर रहा है। बहुतेरे मतदानी एक बोतल और कंबल में मतदान करने को तैयार हैं तो बड़े वाले दानी हवाई अड्डे के ठेके की एवज में चुनावी दान करने को तैयार हैं। हर दान की कुछ न कुछ कीमत लगाई जा रही है।

दान के मायने ही बदल गए हैं। कुम्भ हो या कोई और धार्मिक स्थल- भगवान का वरदान भी आमजन के लिए अलग और वीआईपी जमात के लिए अलग।

इनसे अच्छा तो हमारे तिवारी जी का ही हिसाब है ङ्क शहर का कोई भिखारी ऐसा नहीं होगा जिसे तिवारी जी ने दान न दिया हो मगर वो दान उधार में देते आए हैं हमेशा। हर भिखारी को कहते हैं -हमारी तरफ से दस रुपये। जब भिखारी पैसे माँगता है तो कहते हैं खाते में लिख ले-कहीं भागे थोड़े ही जा रहे हैं। किसी दिन आराम से हिसाब कर लेंगे। दान के बाजार का एक ऐसा नायाब हीरा हैं तिवारी जी जैसा पहले कभी नहीं देखा गया। पूछने पर तिवारी जी बताते हैं कि वो भिखारी के अंदर व्यापारी वाली फ़ील डालना चाहते हैं कि वो भी उधार दे सकता है। कितनी उच्च सोच है तिवारी जी की।

और एक हमारी सरकार है जो व्यापारियों के अंदर भिखारियों वाली फील डालने में व्यस्त है और चुनावी दानियों के चलते जीत के लिए आश्वस्त भी।